स्वर्गीय निर्वाचन

विषय सूची

अध्याय	विषय	पृष्ठ
१.	जगत से अलग किया जान	
२.	किसी उद्देश्य की पूर्त्ति के लिए चुना जाना	
३.	चुना हुआ पात्र	
४.	साक्षी के रुप में चुना जान	
५.	उसकी महिमा के लिए चुना जान	
६.	अनन्त काल के लिए चुना जाना	

अध्याय : १

जगत से अलग किया जाना

"मैंने तुम्हें चुन लिया है!" युहन्ना १५:१६।

परमेश्वर की सन्तान के लिए इन शब्दों का एक खास और अद्भुत अर्थ है। हम सब की यह दैनिक प्रार्थना होनी चाहिए – "हे प्रभु, मैं चाहता हूँ कि ये शब्द मेरे जीवन के लिए यथार्थ हो उठें, केवल आज के लिए ही नहीं, वरन् प्रतिदिन के लिए ऐसा ही हो।

यदि हम सचमुच में परमेश्वर के द्वारा निर्वाचित कर लिए गए हैं तो हमारी कैसी ही कठिनाइयाँ क्यों न हों, परमेश्वर उनका समाधान अवश्य ही करेगा। हम सब चाहे उद्धार पाए हुए हों अथवा नहीं, प्रत्येक के जीवन में कोई न कोई समस्या रहती है। नये विश्वासी हों अथवा पुराने, हम आत्मिक रुप से समृद्ध हों अथवा नहीं, हमारा आत्मिक विकास हो रहा हो अथवा नहीं, तौभी जब तक हम इस पृथ्वी पर जीवित हैं अन्तिम घड़ी तक हमारे लिए कोई न कोई समस्या बनी ही रहेगी। हमारे लिए ऐसी प्रतिज्ञा नहीं की गई है कि यदि हम प्रभु में विश्वास करें तो हमारी सारी समस्याओं और कठिनाइयों का अन्त हो जायेगा। बल्कि हमें बड़ी-बड़ी कठिनाइयों और समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। तथापि हम अवश्य उसमें विश्वास करते हैं कि इन शब्दों में हम में से प्रत्येक के लिए परमेश्वर का उत्तर छिपा हुआ है – "मैंने तुम्हें चुन लिया है।" हमें कितनी शान्ति मिलती है और कितना भरोसा होता है जब यह हम अनुभव करते हैं कि हमें प्रभु ने चुन लिया है! वह हमें हमारे पड़ोसियों से अधिक जानता है, हमारी सारी आन्तरिक भ्रष्टाचारिता, दुर्गन्ध युक्त सड़ान्ध, असफलाताएँ तथा त्रुटियाँ आदि सब कुछ जानता है। वह यह भी जानता है कि हमने किस प्रकार उसकी अवहेलना करके उसे दुखी बनाया है, तोभी वह हमारे लिए जो उसके रक्त से धुलकर खरीदे गए हैं, ये बातें कह रहा है।

"मैंने तुम्हें संसार से चुन लिया है।" यूहन्ना १५:१६।

ये शब्द उनके लिए कहे गए हैं जो प्रभु के द्वारा निश्चयपूर्वक चुने गए हैं। इफिसियों के पत्र में पौलुस ने परमुश्वर के लोगों को सात नामों से सम्बोधित किया है। कलीसिया,

उसके शरीर, नये मनुष्य, परमेश्वर का परिवार अथवा उसकी गृहस्थी, परमेश्वर की कारीगरी, पवित्र मन्दिर तथा मसीह की दुल्हिन के नाम से उन्हें पुकारा गया है। परमेश्वर के लोगों को वह कलीसिया क्यों कहता है? (इफिसियों १:२२)। अंग्रेजी के 'चर्च' शब्द के लिए ग्रीक भाषा में 'एक्लीसिया' शब्द का प्रयोग होता है जिसका एक खास अर्थ है। यूहन्ना १५:१६, १८ में जब प्रभु ने इन शब्दों को प्रयोग किया – "मैंने तुम्हें संसार में से निकाला है।" जिस शब्द का प्रयोग हुआ है वह बड़ा ही सबल शब्द है। इसका मात्र यह अर्थ नहीं कि - 'मैंने तुम्हें चुन लिया है जैसे मैं किसी मित्र को चुनता।' प्रभु ने यहाँ जिस शब्द का प्रयोग किया है उसका अर्थ है – "मैंने तुम्हें बड़ा बल लगा कर खींचा अथवा बाहर निकाला है।" दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि हमें संसार से खींच कर निकालने में प्रभु को बड़े शक्तिशाली सामर्थ्य का उपयोग करना पड़ा है। 'एक्लीसिया' शब्द का यही अर्थ है।

मान लीजिए कि आप एक ऐसी दलदली भूमि पर चल रहे हैं जो ऊपर से तो हरे-भरे घास के मैदान के समान दीख पड़ती है, परन्तु भीतर एकदम दलदली कीचड़ भरा हुआ है। जब आप उस पर चलने लगते हैं तो कदम-कदम पर आप कीचड़ में अधिक धँसते जायेंगे और जितना ही अधिक आप निकलने की कोशिश करेंगे उतना ही अधिक आप नीचे धँसते जायेंगे। अब कल्पना कीजिए कि एक बहुत बड़ा हाथी ऐसे ही कीचड़ में धँसता जा रहा है और इस कारण वह बाहर निकल आने की जी-जान से कोशिश कर रहा है। वह जितना ही प्रयत्न करता है उतना ही अधिक वह नीचे धँसता चला जाता है। अब यदि दूसरे हाथी भी मिलकर उसे खींच निकालने की चेष्टा करें तो वे भी सब के सब उस दलदली भूमि में धँस जायेंगे। यदि पास पड़ोस के सभी व्यक्ति उस हाथी को बचाने के लिए वहाँ आकर उसे खींचने लगें तो वे सब भी उसी प्रकार कीचड़ में डूब जायेंगे। पंकिल भूमि की ऐसी ही प्रकृति होती है। भजन सं. ४०:२ में संहिताकार ने भी इसी शब्द का प्रयोग किया है और धर्मशास्त्र इसी रुप से एक पापी की अवस्था का चित्रण करता है। परमेश्वर के वचन के अनुसार वह भी इसी प्रकार दलदली भूमि पर चलता और उसमें डूबता जा रहा है।

मनुष्य के जीवन में एक समय ऐसा भी आता है जब वह अपने पापमय जीवन के लिए पश्चाताप करता है – वह समय चाहे यौवन काल हो, प्रौढ़ावस्था हो अथवा वृद्धावस्था हो। वह निर्णय करता है - 'कल से मैं बदलने के लिए जो-तोड़ चेष्टा करुँगा।' अब मैंने तय कर लिया है कि मैं अच्छा जीवन व्यतीत करुँगा। परन्तु शोक की बात है कि वह बिगड़ता ही जाता है, और वह जितनी ही चेष्टा करता है उतना ही वह बुरा बनता जाता है, क्योंकि मानव-प्रकृति ही ऐसी है। यदि वह दूसरों के पास जाकर भी अपने आप का सुधारने में सहायता प्राप्त करना चाहे तो वे भी उसे सुधारने में असफल ही रहेंगे। बल्कि वे भी उसके साथ उस पंकिल कीचड़ की गहराई में डूब जायेंगे जहाँ से कोई भी मानवीय चेष्टा उन्हें बाहर निकाल सकने में समर्थ न होगी।

पाप के पंकिल कीचड़ से लोगों को बाहर निकाल सकने की क्षमता प्रभु यीशु मसीह में ही है। वह इसी कार्य का सम्पादन करने के लिए इस वसुधा पर अवतरित हुआ। इसी अर्थ में वह 'मंडली' शब्द का प्रयोग उनके लिए करता है जो खींचे जा चुके हैं, जिन्हें बाहर निकाल लिया गया है, अर्थात् जो चुन लिए गए हैं। हमारे जीवन में इस चुनाव के प्रमाण पाए जाने के पूर्व उसके कर्षक सामर्थ्य (खींचने की ताकत) का प्रयोग होना अनिवार्य है। क्या प्रभु ने आपको चुन लिया है? क्या इस बात की आपकी भीतरी निश्चयता है जिसके आधार पर आप यह कहें कि– "प्रभु यीशु ने मुझे चुन लिया है"? क्या आप कह सकते हैं कि इस बात का प्रमाण आपके जीवन में विद्यमान है?

उसके द्वारा चुने जाने का अर्थ समझने के पहले 'संसार' शब्द का अर्थ समझना होगा। इस समय आप इस पृथ्वी पर जो कुछ भी देखते हैं सब शीघ्र ही चले जायेंगे। 'आकाश और पृथ्वी टल जायेंगे, पर मेरे वचन कदापि न टलेंगे' (मत्ती २४:३५)। जो वस्तुएँ हिलाई न जा सकेंगी वेही रहेंगी। जो टल जायगा बाइबिल में उसे ही संसार कहा गया है। सूर्य, चन्द्रमा तथा तारे भी चले जायेंगे। किन्तु कुछ पदार्थ ऐसे भी हैं जो चले नहीं जायेंगे। हमारे प्रभु ने हमें 'एक ऐसे राज्य में प्रवेश कराने को चुना है जो हिलाया न जा सकेगा' (इब्रा. १२:२५)। यदि आप को प्रभु यीशु ने चुना है तो आप में कौन-कौन सी

बातें ऐसी हैं जो टलेंगी नहीं, और चली जानेवाली वस्तुएँ कितनी हैं? हम यह नहीं जानना चाहते कि बैंक में आपने कितना धन जमा किया, अथवा कितनी सम्पति आपको हे, इत्यादी, अथवा यह भी नहीं कि आपको बाइबिल का ज्ञान कितना है। बाइबिल का ज्ञान चाहे जितना ही अच्छा क्यों न हो, शीघ्र भुला दिया जायेगा। हमारे भले काम अनन्त काल तक नहीं टिकेंगे और हम हमेशा के लिए भले भी बने नहीं रह सकते, क्योंकि आयु के साथ साथ हमारा स्वभाव भी बदलता जाता है, और हम सब में दुर्बलताएँ भरी हैं तथा हम अपना समय हौर अपनी शक्तियाँ ऐसी वस्तु के लिए नष्ट कर रहे हैं जो ठहरने वाली नहीं।

जब हम इस बात का अनुभव कर लेते हैं कि प्रभु ने हमें चुना है तो हम इस बात को भी अनुभव कर लेते हैं कि यह संसार जहाँ हम रहते है, क्षणभंगुर है, और इस पर की कोई भी वस्तु सच्चा आनन्द नहीं दे सकती। संसार की वस्तुएँ हमारी दृष्टी में पंकिल कीच के समान प्रतीत होगी जिनमें हम केवल धँसते ही जा सकते हैं। प्रभु यीशु मसीह कहता है – "मैंने तुम्हे संसार में से चुन लिया है।" वह हमें साँसारिक पदार्थों के आकर्षण से बचाने, अर्थात् उन वस्तुओं से खींच कर दूर निकालने को आया है जो हमें घसीट कर नीचे ले जाती हैं; और वह इसलिए आया है कि वह हमें अनन्तकाल तक टिकने वाला धन प्रदान करें। उसे अस्वीकार न करें और न उन वस्तुओं से चिपके रहें जो नाश हो जानेवाली हैं।

इससे आगे प्रभु कहता है - 'मैंने तुम्हें संसार में से चुन लिया है ताकि मैं तुम्हें अपना मित्र बना सकूँ।' (यूहन्ना १५:१५)।

ये शब्द केवल उन प्रेरितों के लिए ही नहीं हैं जिनसे वह बोल रहा था। ये आपके और मेरे लिए भी हैं। वह कहता हें - 'मैंने तुम्हें अपना मित्र बनाने के लिए चुना है।' जिन्होंने स्वर्गीय जीवन पाया है केवल वे ही इन बातों को समझ सकते हैं, क्योंकि पाप और अन्धकार में जीवन बिताने वाली पापी परमेश्वर का मित्र कैसे हो सकता है? उसने कहा 'जो बातें अपने पिता से सुनीं, वे सब तुम्हें बता दीं।' और हम सारे जगत में इसकी सत्यता प्रमाणित कर सकते हैं कि हम प्रभु यीशु मसीह के मित्र हैं, क्योंकि जो सत्य और रहस्य दूतों से भी गुप्त रखे गए हैं वे हमारे लिए प्रकट किए जा रहे हैं।

जैसे-जैसे हम परमेश्वर के साथ-साथ चलने लगते तथा उससे बातचीत करने तथा प्रतिदिन उससे कुछ न कुछ नई वस्तु पाने का रहस्य सीखते जाते हैं वैसे-वैसे प्रभु यीशु मसीह हमें उन बातों की शिक्षा देता जाता है। ये बातें हम किसी विद्यालय के शिक्षक, प्राध्यापक अथवा अन्य किसी व्यक्ति से सीख नहीं सकते। मत्ती॰ ११:२५-२७ और १६:१७ में हमें एक ऐसे व्यक्ति के विषय में बताया जाता है जिसने प्रभु यीशु मसीह के साथ्रा तीन वर्षों तक रह कर उसके अनेकों अद्भुत कार्यों को देखा और उसे प्रचार करते हुए सुना था। इसी कारण वह सच्चाई के साथ प्रभु मसीह से यह कह सकता था – मैं तुम्हारे विषय में सब कुछ जानता हूँ क्योंकि मैं तुम्हारे साथ रहा हूँ, तुम से बातचीत की है, तुम्हारे साथ खाया-पीया है, तुम्हारे साथ सोया है। परन्तु प्रभु यीशु मसीह ने उस से कहा – "हे शमौन, तुम मांस और लहू के द्वारा मुझे नहीं जानते, परन्तु स्वर्गीय पिता ने तुम पर इसे प्रकट कियाहै।"

जब परमेश्वर का जीवन आप में प्रवेश करता है तो आप यह कह सकने में समर्थ होंगे - 'अब मैं प्रभु को जानता हूँ, क्योंकि उसीका जीवन मुझ में लगातार और प्रचुरता से प्रवाहित हो रहा है। वही जीवन मुझ में उसकी इच्छा और उद्देश्य का प्रकाशन करता है। वह मुझे दण्ड भी दे सकता है, डाँट भी सकता है तथापि मैं जानता हूँ कि उसने मुझे चुना है। और उसने मुझे केवल थोड़े ही दिनों के लिए नहीं चुना जैसे संसार अपने प्रिय-पात्रों को चुनता है।' उदाहरण स्वरुप, कोई युवक किसी युवती से इसीलिए विवाह कर सकता है कि वह समझता है कि वह उससे इतना अधिक प्रेम करता हे कि उसक बिना वह जीवित नहीं रह सकता। तथापित कुछ महीनों के बाद वह इस विवाह के कारण पछदाने लगता है। मनुष्य प्रतिवर्ष अपना विचार बदलता है, परन्तु परमेश्वर का मार्ग ऐसा नहीं। जब परमेश्वर चुनता है तो अनन्त काल के लिए चुनता है। हम लोग भले ही उसकी अवहेलना करें तथा उसके मन को कष्ट पहुँचाएँ तौभी उसका चुनाव कभी बदल नहीं सकता।

परमेश्वर ने हमें चुना है। उसने हमें किसी उद्देश्य ही पूर्त्ति के लिए चुना है और वह हमें उस उद्देश्य के लिए सक्षम बनाना भी जानता है (यशा॰ ४९:३)। परमेश्वर ने याकूब

को कई बार डाँटा। अपितु, उसने उसे चुना था और उसका यह चुनाव कभी बदला नहीं। एक चुने हुए पात्र के रुप में याकूब का निर्माण करने में परमेश्वर को कई वर्ष लग गए और उसे बहुत धैर्य धारण करना पड़ा। परमेश्वर कह सकता था – "हे याकूब, अब तो तुम बिल्कुल ही अच्छे नहीं हो। तुम्हारे चुनाव में मैंने भूल की है, और तुम्हारे लिए अब कोई आशा नहीं है। तुम तो बहुत ही दुर्बल और गए – गुजरे हो।" परन्तु परमेश्वर ने कभी ऐसी कोई बात न कही। वह याकूब की डाँट-फटकार करता रहा और जब तक वह इस्त्राएल नहीं बन गया वह उसे समझाता-बुझाता रहा। उसके जन्म से पहले ही परमेश्वर ने उसे चुन लिया था, और उसका चुनाव कभी बदल नहीं सकता। आप चाहे कोई भी क्यों न हों और यद्यपि आपने अपने पड़ोसियों के बीच अपने आपको गया-गुजरा प्रमाणित कर दिया है; और हाँ, यद्यपि आपके माता-पिता को भी आपके मित्रों के सामने यह कहने का कारण हो कि अब आपके लिए कोई आशा नहीं तथा वे यह भी सोचते हों कि आप एकदम व्यर्थ और किसी भी काम के नहीं, तथापि परमेश्वर आपको कभी भी नहीं त्यागेगा। यदि आप पक्के विश्वासी हैं तो वह अब भी आप के प्रति कह रहा है – "मेरे पुत्र, अथवा मेरी पुत्री मैंने तुम्हें चुना है, यद्यपि तुम मुझे पीड़ा पहुंचा रहे हो, मेरी अवहेलना कर रहे हो तथापि मैंने तुम्हे चुन लिया है।"

परमेश्वर ने याकूब से उत्पत्ति॰ २८:१५ में कहा – "मैं तुम्हें कभी नहीं छोडूँगा।" तुम मुझे छोड सकते हो। तुम कह सकते हो – "मुझे परमेश्वर के लिए समय नहीं है। मैं अधिक धन अर्जन करना चाहता हूँ। मैं अपनी स्त्री और बच्चों का भरण-पोषण करना चाहता हूँ। मैं दुनिया में नाम कमाना चाहता हूँ। मुझे अपना व्यापार चलाना है। यह व्यापार बड़ा आवश्यक भी है। तो आप ही बताएँ, अब हम बाइबिल पढ़ने और प्रार्थना करने कासमय कहाँ से निकालें?" इन जैसी बातों के द्वारा ही अनेकों व्यक्ति परमेश्वर के नाम से ठंढे पड़ गए हैं। तथापि वह आप से अब भी कह रहा है – "तुम मुझे छोड़ सकते हो, परन्तु मैं तुम्हें कभी नहीं छोडूँगा। मैंने तुम्हें अनन्त काल के लिए चुन लिया है।" अहा! कैसा प्रेम! कैसा अनुग्रह! कैसा उद्धार!

अध्याय:२

किसी उद्देश्य की पूर्त्ति के लिए चुना जाना

"हे प्रभु, अपने भक्तों पर किए जानेवाले अनुग्रह सहित तू मुझे स्मरण कर। अपना उद्धार लेकर तू मेरे पास आ, ताकि मैं तेरे द्वारा मनोनीत होने का कल्याण देख सकूँ, तेरी प्रजा के आनन्द से आनन्दित हो उठूँ तथा तेरे उत्तराधिकारी को पाकर गौरवान्वित हो जाऊँ।" (भजन॰ १०६:४, ५)।

मुझे विश्वास है कि इन शब्दों के द्वारा प्रभु को हमसे कुछ कहना है। घुटने टेक कर आप इन पदों को अपने लिए पढें। इन्हें विश्वास के साथ पढें। इन्हें बारम्बार पढ़े। जो कुछ भी आपकी आवश्यकता हो, इन शब्दों को बारम्बार पढें, और तब आप देखेंगे कि आपके हृदय में कुछ परिवर्तन हो रहा है। अध्यात्मिक अभिलाषा जगाने के लिए परमेश्वर अनेकानेक अवस्थाओं और परिस्थितियों को उत्पन्न करता है। हममें से थोडे ही ऐसे हैं जिनके हृदय में वास्तविक रुप से परमेश्वर के लिए सच्ची भूख-प्यास जगती है। हममें से अनेकों व्यक्ति ऐसे हैं जो परमेश्वर को उससे कुछ पाने की इच्छा से स्मरण करते हैं, अथवा हम अपने दुख में, कष्ट में, रोग में, अथवा निर्धनता में उसे याद करते हैं। बहुत ही थोड़े जन ऐसे हैं जो केवल उसीके लिए उसके पास जाते हों। हम उसके निकट इसीलिए जाते हैं कि हम उससे कोई सांसारिक वस्तु माँगे जो नाशवान हैं। बड़े दुख की बात है कि हममें से बहुतों के हृदयों में नाशवान वस्तुओं को पाने की इच्छाएँ भरी रहती है जिनका कोई यथार्थ मूल्य नहीं।

सम्भवत: आरम्भ में हम नहीं समझते कि हम क्या कर रहे हैं। कारण यह है कि हम अपने कच्चे विचारों के द्वारा भटका दिए जाते हैं। एक साधारण सा उदाहरण लीजिए। कुकुरमुत्ता नामक पौधे को प्राय: सब लोग जानते हैं। यह पौधा अधिकतर बलुआहीं भूमि में पैदा होता है। वर्षा ऋतु में यह रात भर में ही पैदा हो जाता है। वास्तव में एक कहावत है जिसका अर्थ है 'कुकरमुत्ते की तरह पैदा होना।' अपन बचपन के दिनों में हम लोग वर्षा के

पश्चात् कुकुरमुत्ता जमा करने के लिए बाहर निकल जाया करते थे। उसे ढूँढ़ते-ढूँढ़ते हम लोग चार-पाँच मील तक चले जाते थे। एक दिन सबेरे हम लोगों को सफेद किस्म के बहुत से कुकुरमुत्ते मिले। मैं इतना आनन्दित हुआ कि टोकरी भर कर माँ के पास घर ले गया और कहा - 'मुझे ढेरों कुकुरमुत्ते मिले! जब तुम इसमें प्याज डाल कर सब्जी बनाओगी तो खाने में कितना मजा आएगा!' मेरी माँ ने टोकरी में झाँका उसने एक को निकाल कर देखा औंर फेंक दिया। फिर दूसरा लिया और उसे भी फेंक दिया। फिर तीसरे को भी देखा और फेंक दिया। तब उसने कहा - 'बेटे, तुम्हें तो धोखा हो गया। ये सब कुकुरमुत्ते नहीं है। देखने में वैसे ही लगते हैं, पर हें नहीं। ये किसी काम के नहीं।'

हम देखते हैं कि परमेश्वर की वस्तुओं को पहचानने में हम इसी प्रकार भूल करके उनके बाहरी रुप को देखकर धोखा खा जाते है; पर शोक की बात है कि हम उन्हें पहचान नहीं पाते। हम सांसारिक वस्तुओं पर अपना समय, धन और शक्ति नष्ट कर रहे हैं।

आप क्या कर रहे हैं? क्या आप परमेश्ववर की वस्तुओं की सही पहचान रखते हैं? क्या आप कह सकते हैं कि आपकी भूख-प्यास नाशवान वस्तुओं से अधिक परमेश्वर की वस्तुओं के लिए है? शोक की बात है कि प्रत्येक हृदय में कोई न कोई इच्छा, कोई न कोई अभिलाषा बनी रहती है जिसके वशीभूत हो कर हमारा मन परमेश्वर की वस्तुओं से दूर चला जाता है। हम लोगों को बराबर प्रार्थना में लगे रहने की आवश्यकता है ताकि हमारा प्रेमी परमेश्वर हमारे मन में आत्मिक आकांक्षा उत्पन्न करे जैसा कि भजन संहिता का लेखक इन शब्दों में प्रकट करता है - 'हे प्रभु, मुझे स्मरण रख।' परमेश्वर को जानने की इच्छा प्रकट करने के लिए यह आवश्यक नहीं है कि हम बड़ी लम्बी प्रार्थना करें। इसके लिए तो केवल सरल विश्वास की आवश्यकता है।

किसी समय की बात है कि एक छोटा बच्चा स्कूल में अंग्रेजी सीख रहा था। वह ए, बी, सी, अक्षरों को याद कर रहा था। फिर एक दिन उसने प्रार्थना करनी आरम्भ कर दी। उसने कहा - 'प्रभु, ए, बी, सी, डी।' एक क्षण रुकने के बाद उसने फिर प्रार्थना की - 'ई, एफ, जी, एच, आई, जे, के, एल, एम, एन, ओ, पी, क्यू....।' तब उसकी माँ ने उसे

टोक कर पूछा - 'मेरे बच्चे, क्या कर रहे हो?' बच्चे ने उत्तर दिया - 'मैं प्रार्थना कर रहा हूँ।' 'क्या प्रार्थना कर रहे हो?' 'माँ मैं नहीं जानता कि हिज्जे कैसे करुँ, पर परमेश्वर तो हिज्जे कर सकता हे। तुम कहती हो बी-ए-टी-बैट, सी-ए-टी-कैट, एप–ए-टी-फैट। मैं तो सरल से सरल शब्दों का भी हिज्जे करना नहीं जानता। इसीलिए मैं परमेश्वर को ये अक्षर दे रहा हूँ ताकि वह हिज्जे कर दे।' इस बच्चे का दृष्टिकोण सही था। वह विश्वास के साथ प्रार्थना कर रहा था। प्रार्थना में यह नहीं देखा जाता कि आप उचित शब्दों का सही-सही प्रयोग कर रहे हैं या नही। क्या आप सच्चाई के साथ कह सकते हैं – "हाँ प्रभु, मैं विश्वास करता हूँ कि तू मुझे स्मरण रखेगा। हे प्रभु, तू मुझे स्मरण रख; मुझे स्मरण रख!' ये सब अत्यन्त सरल शब्द हैं, परन्तु वे हृदय से निकलें। आप अपनी ओर न देखें, न तो अपनी दशा पर विचार करें, और न अपने पापों और असफलताओं पर ध्यान दें। आप उसकी ओर ताकें जो आपका प्रेमी और जीवित मुक्तिदाता है और जो आपकी माता, पिता, स्त्री, भाई, बहन, बच्चों और मित्र से भी अधिक प्यार करता है।

भजन सं. २७:१० में गीतकार कहता है – "जब मेरे माता-पिता मुझे छोड़ देते हैं तो उस समय प्रभु हमारा पालन-पोषण करता हैं।" बहुत सम्भव है कि आपके जीवन में वह दिन आए जब आपकी माता, आपके पिता, आपके भाई, बहन तथा आपके प्रियजन आपके विरोधी बन जायें। अनेकों माता-पिता अपने दुष्ट बच्चों के विरोधी बन गए हैं। परन्तु परमेश्वर का कहना है कि यद्यपि तुम्हारे माता-पिता तुम्हें त्याग सकते हैं परन्तु मैं ऐसा कभी न करुँगा। अपनी ओर न देखें। आप चाहे जो भी हों और आपके पाप चाहे जितने ही शर्मनाक और भयंकर क्यों न हों, अथवा नया जीवन पाने के बाद चाहे जितनी बार प्रभु को छोड़ा हो, क्या आप परमेश्वर के सामने यह कहने को तैयार हैं - 'हे प्रभु, मेरी याद कर, मुझे न भुला। मैं किस के पास जाऊँ? मेरी सारी आशाएँ तुझ पर ही टिकी हैं। हे प्रभु मेरी सुधि ले?' आप देखेंगे कि यह साधारण प्रार्थना आपको परमेश्वर के निकट और परमेश्वर को आपके निकट खींच लाएगी।

भजन सं. १०६:४ के पद पर फिर से ध्यान दें। भजन संहिताकार ने शुरु किया - 'हे प्रभु, मुझें स्मरण कर।' फिरवह आगे कहता हैं - 'अपनी उसी कृपा के अनुसार मेरी सुधि ले जो तू अपनी प्रजा पर करता आया है।'

संसार में लोग कई समूहों में विभक्त हैं। कुछ लोग तो राष्ट्रीयता से प्रभावित हैं। उनका कहना है - 'मैं भारतवासी, चीनी अथवा जापानी हूँ' इत्यादी। कुछ लोग धन से प्रभावित है, कुछ अपने पद से ओर कुछ लोग भाषा, शिक्षा अथवा पेशे से प्रभावित हैं। परन्तु बाइबिल में हम केवल दो विभाग पाते हैं – परमेश्वर के लोग और शैतान के लोग। यूहन्ना ८:४०, ४१, और ४४ पदों में लोग कह रहे थे - 'हम परमेश्वर के हैं; हमारे पिता इब्राहीम है।' परन्तु प्रभु यीशु ने उन्हें याद दिलाई - 'नहीं, तुम लोग परमेश्वर के नहीं हो; तुम अपने पिता शैतान के हो।' ये बड़े कठोर वचन हैं और इनसे लोगों को आघात पहुँच सकता है। पर हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि ये मनुष्य के नहीं; परमेश्वर के वचन हैं। ये प्रभु यीशु मसीह के द्वारा कहे गए थे।

आप किसी समूह के अन्तर्गत हैं? मैं आपकी राष्ट्रीयता, आपके काम-धन्धे, आपके धन-दौलत, बाइबिल ज्ञान, नाम अथवा प्रसिद्धि के विषय में जानना नहीं चाहता। आप परमेश्वर के लोगों में से हैं या दूसरे समूह के अन्तर्गत हैं? परमेश्वर का स्वर्गीय जीवन प्राप्त करने पर ही आप परमेश्वर के परिवार के कहला सकते हैं। सुन्दर पैंट, कमीज पहन कर, गले में टाई बाँध कर आप अंग्रेज अथवा अमरीकी नहीं बन सकते।

कुछ दिन पहले की बात है, रेलवे की नौकरी के लिए आंग्ल-भारतीयों को प्राथमिकता दी जाती थी। इस कारण बहुत से भारतवासी नौकरी के लिए आवेदन पत्र देते समय जूते, टोप और टाई किसी से माँग कर पहन लेते और मि.स्मिथ, मि.हेनरी अथवा मि.मैथ्यू के नाम से अपना परिचय देते थे। अब इसका क्रम बदल गया है और मि.स्मिथ अब अपना परिचय गुरुस्वामी के नाम से देते हैं! जो भी हो; कहने का मतलब यह है कि केवल नाम बदल देने से कोई भिन्न व्यक्ति नहीं बन सकता।

क्या आप परमेश्वर के लोगों में से हैं? अपने प्रति ईमानदार बनें। आपकी पहली प्रार्थना यह होनी चाहिए - 'हे प्रभु, अपनी उसी कृपा के अनुसार मेरी सुधि ले जो तू अपनी प्रजा पर करता आया है।' कैसा महान अधिकार, कितना ऊँचा सम्मान इस बात में है कि हम परमेश्वर की प्रजा कहलाएं। प्रभु यीशु मसीह इस संसार में इसी लिए आए कि शैतान की सन्तान परमेश्वर की सन्तान बन जाय।

भारत में आप जहाँ कहीं भी जायें, वहाँ अनेकों भिखारी पाएँगे। भिखारी आपको 'पिता' कह कर पुकार सकता है; परन्तु क्या आप भी उसे 'पुत्र' कहेंगे? जिसने पिता से अपना जीवन पाया है वही पुत्र कहला सकता है। अब प्रश्न है – क्या परमेश्वर सचमुच हमें अपने लोग कह कर पुकार सकता है? मैं परमेश्वर को कितना धन्यवाद देता हूँ जो मुझे 'मेरे पुत्र!' कह कर सम्बोधित करता है। परमेश्वर का जीवन, अनन्त आत्मिक जीवन, नया और स्वर्गीय जीवन पाकर ही आप परमेश्वर की सन्तान कहला सकते हैं। तब तो आप भी बिना माँगे ही उसका स्वर्गीय अनुग्रह पा लेंगे।

भजन संहिताकार उसके बाद कहता है - 'हे प्रभु, अपना उद्धार लेकर मेरे पास आ।' उसके कहने का मुख्य तात्पर्य यह है - 'हे प्रभु, तू मुझे अपना उद्धार सम्पूर्ण रीति से दिखा।' अब आप मान लें कि आप डॉक्टर बनना चाहते हैं। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए आप मेडिकल कॉलेज जाते हैं, सारे कॉलेज भवन का चक्कर लगाते हैं, मुर्दों की हड्डियों को देखते हैं और बहुत से मृतक शरीरों का निरीक्षण भी करते हैं जिन्हें चीर-फाड के लिए वहाँ लाया गया है। यह भी मान लीजिए कि आप बहुत से अस्पतालों में जाकर पेनिसिलिन और स्ट्रेप्टोमाइसिन आदि दवाओं के नाम भी कंठस्थ कर लेते हैं। इस प्रकार एक सप्ताह तक चक्कर लगाने के बाद घर जाकर क्या आप कह सकते हैं - 'माँ, अब तो मैं डॉक्टर बन गया?' माँ तो पूछ लेगी - 'इतनी जल्दी कैसे?' आप कह भी सकते हैं - 'माँ, मैंने सभी हड्डियों को देखा है। मैंने मुर्दों को भी देखा है। मैं यह भी जानता हूँ कि पेनिसिलिन और स्ट्रेप्टोमाइसिन क्या है। मैंने स्टेथिस्कोप भी खरीद लिया है। अब मैं डॉक्टर हूँ।' किन्तु

आप इस विधि से डॉक्टर नहीं बन सकते। सभी रोगों और औषधियों तथा मानव शरीर पर उनके प्रभावों के सम्बन्ध में आपको कई साल तक अध्ययन करना पड़ेगा।

ऐसे अनेकों मसीही हैं जो यह समझते हैं कि बाइबिल के पदों को सीख कर वे उद्धार प्राप्त कर लेंगे। किन्तु यह उद्धार महान और अनन्तकालीन है। यह केवल चन्द दिनों अथवा चन्द सालों मे भी समझा नहीं जा सकता। मसीह को सम्पूर्ण रीति से समझने के लिए अनन्त काल की आवश्यकता है। भजन संहिताकार कहता है - 'हे प्रभु, अपना उद्धार लेकर मेरे पास आ।' वह तो यह नहीं कहता कि 'हे प्रभु, मुझे बाइबिल की अधिकाधिक शिक्षा दे।' वह बड़ी व्याकुलता से कह रहा है - 'हे प्रभु अपने उद्धार के सम्बन्ध में मुझे अधिक पूर्णता से शिक्षा दे।

किसी समय में शाहजहाँ नामक एक मुल सम्राट था जिसे उसके पुत्र ने जेल में डाल दिया। उसके पुत्र ने कहा - 'मेरे पिताजी की मृत्यु तो आसानी के साथ होंगी नहीं, और मैं गद्दी पर बैठना चाहता हूँ।' इसलिए उसने पिता को आगरा के किलें में कई सालों के लिए बन्द कर दिया। वह प्रति दिन उसे खाने को मटर दिया करता था। भाग्यवश उसके पिता के लिए जो रसोइया था वह केवल मटर से पचहत्तर प्रकार के भोजन तैयार कर सकता था। यहाँ इस विचार को अभिव्यक्त किया गया है कि साधारण से साधारण बातों क व्यवहार में भी प्रवीणता प्राप्त करने में वर्षों लग सकते हैं। तो आप इस महान उद्धार का ज्ञान थोड़े ही समय में पाने की आशा कैसे कर सकते हैं? यह उद्धार आपकी कल्पना से कहीं अधिक महान है।

परमेश्वर के प्रत्येक काम का उद्देश्य क्या है, वह किस विचार से किया जाता है, आदि बातों को भली भाँति पूर्णता के साथ समझने की आवश्यकता है। वह आपको क्यों ढूँढ़ रहा है? आपको ढूँढ़ निकालने तथा बुलाने में उसे इतना अधिक समय लगाने की आवश्यकता क्या है? उदाहरण के लिए आप पहाड़ों पर उगने वाले औषधियों के कुछ मुख्य पौधों को लें जो रोगों अथवा घावों की चिकित्सा के लिए विभिन्न गुण रखते हैं। जो लोग इन पौधों और पत्तियों के विभिन्न गुणों की जानकारी रखते हैं उन्हें महीनों-सालों तक

उनकी खोज में मीलों दूर-दूर तक भटकना पड़ता है। अन्य व्यक्ति उन्ही पौधों के निकट से चले जायेंगे, पर वे उनकी ओर झाँकने के लिए भी नहीं ठहरेंगे। आत्मिक विषयों के सम्बन्ध में भी यही बात है। आपके माता-पिता से भी अधिक परमेश्वर आपकी कीमत को जानता है। परमेश्वर की दृष्टि में एक आत्मा का मूल्य संसार की सारी सम्पत्ति से भी अधिक है। परमेश्वर आपके पीछे पड़ा है, क्योंकि वह जानता है कि वह आपका व्यवहार किस काम के लिए करे। वह अनन्त काल के लिए आपको अपना सहभागी और सहकर्मी बनाना चाहता है। परमेश्वर के उद्धार के लिए भजन संहिताकार की अभिलाषा इस प्रार्थना में सन्निहित है - 'हे परमेश्वर, तू मुझ अपना चुना हुआ पात्र बना।' पाँचवें पद में वह इसका कारण बताता है - 'कि मैं तेरे चुने हुओं के कल्याण की कामना करुँ।'

एक बार मैं एक घर में गया। वहाँ दीवार में लगे हुए तख्ते पर बहुत सी वस्तुएँ सुन्दरता से सजा कर रखी हुई थी। मैंने घर के मालिक से पूछा - 'ये सब कैसी वस्तुएूं हैं?' उसने उत्तर दिया कि ये सुन्दर वस्तुएँ साधारण अंडों के कोये मात्र हैं। उसने एक छोटा सा छिद्र बना कर अंडे के भीतर की वस्तु निकाल डाली थी और इस तरह वह अंडों के कोयों को कई वर्षों से जमा कर रखा था। वह एक अच्छा कलाकार था और प्रत्येक कोये पर सुन्दर चित्रकारी बना डाली थी। वे सब केवल अंडों के साधारण कोये थे जो एकदम व्यर्थ और फेंक दिये जाने योग्य थे। परन्तु जब वे कलाकार के हाथ में पड़े तो वे उपयोगी और सुन्दर वस्तु में परिवर्तित हो गए। यदि आपको एक अंडा मिले तो आप उससे क्या करेंगे? निश्चय ही आप उसे तोड़कर उसके भीतर की वस्तु खाएँगे और कोये को फेंक देंगे। वह कोया आपके किसी काम का नहीं, पर एक कलाकार उससे एक सुन्दर वस्तु का निर्माण कर सकता है।

इसी प्रकार आपके चुनाव और बुलाने में परमेश्वर का एक उद्देश्य है। सम्भव है पाप के कारण आपका विनाश हो चुका है और लेाग आपके मुँह पर पाप के दाग भी देख सकते है। परमेश्वर के वचन के अनुसार हमारी तुलना गन्दे चिथडे, सूखी घास, मुरझाए फूल और सूखी पत्तियों से की गई है। परमेश्वर की दृष्टि में हम इतने तुच्छ हैं! तथापि

उसने हमें चुना है। वह आपको और मुझ को चाहता है ताकि वह हमें प्रतिष्ठा और महिमा क लिए चुने हुए स्वर्गीय पात्र में परिणम करे। परमेश्वर ही यह काम कर सकता है। मनुष्य इसे नहीं कर सकता। क्या आप परमेश्वर का एक चुना हुआ पात्र बनना चाहते है? आपके अत्यन्त अयोग्य होने की अवस्था में भी वह तत्पर है। परमेश्वर आपको अपने प्रति सदाकाला के लिए कोई उपयोगी वस्तु बनाना चाहता है। मगर शर्त्त यह है कि आप आकर अपने आपको सम्पूर्ण रुप और एकान्त भाव से उसके अधीन समर्पित कर दें।

'हे उसके दास इब्राीम के वंश, हे याकूब की सन्तान, तुम तो उसके चुने हुए हो!' भजन॰१०५:६।

यहाँ याकूब को एक चुना हुआ पात्र कहा गया है। परमेश्वर ने उसके विषय में सब कुछ जान बूझ कर उसे चुना था। अब हम इस बात पर विचार करें कि हम लोग किसी वस्तु को किस प्रकार चुनते हैं। उदाहरण के लिए मान लीजिए कि हम आलू या टमाटर खरीदना चाहते हैं। अतएव बाजार जाकर हम अच्छी से अच्छी दूकान चुन लेते हैं। हम दूकानदार से कुछ किलो आलू, टमाटर और प्याज इत्यादि माँगते हैं और चूँकि हम ये चीजें अपने लिए खरीद रहे हैं, इसलिए तौलवाने के पहले हम उनका भली भाँति चुनाव करते हैं - यह बहुत बड़ा है, वह बहुत छोटा है, यह बहुत पका हुआ है, और वह बहुत कटा-फूटा है। इसी प्रकार हम चुनाव करते हैं। किन्तु परमेश्वर यह कहता है कि आप चाहे बदसूरत हों, कटे-फटे हों अथवा पाप के कारण नष्ट हो चुकें हों, कोई बात नहीं। मनुष्य भले ही कहे कि आप किसी काम के नहीं, परन्तु जब आप परमेश्वर के निकट जायेंगे तो वह आपसे केवल इतना ही पूछेगा - 'क्या तुम मेरा पात्र बनने को तैयार हो? क्या तुम अपने को मेरे अधीन समर्पित कर देना चाहते हो?' बस, केवल इतना ही। वह आपको स्वच्छ बनाना, शुद्ध करना और आपका रुप बदलना जानता है। पर शर्त्त यह है कि आप अपने आपको उसके हाथों में छोड़ दें।

जब आप धोबी को कपड़े धोने देते हैं तो क्या उसे कहते हैं - 'भाई धोबी, तुम इस प्रकार कपड़े धोना। कपड़ो को पानी में भिगा दो, फिर साबुन लगाओ, कपड़ो को मलो,

और तब उन्हें फिर पानी में भिगो कर साफ करो? ऐसा कहने पर धोबी अवश्य ही यह उत्तर देगा- 'ये सारी बातें आप मुझ पर छोड़ दें। यह कतई आपका काम नहीं। यह तो मेरा काम है। मैं जानता हूँ कि कपड़े कैसे धोए जाते हैं। यह मेरा धन्धा है। मुझे आप शिक्षा न दें।' धोबी को मालूम है कि वह आपके कपड़े कैसे धोए। इसी प्रकार मसीह भी जानता है कि वह किस मैले कुचैले गन्दे पापी को कैसे शुद्ध करे, उसे बदल कर कैसे कोई तेजस्वी वस्तु बना दे। आपको सिर्फ इतना ही करना है कि आप उसका चुना हुआ पात्र बनने को तैयार हो जायें।

परमेश्वर ने याकूब को चुना और उसे बदल कर परमेश्वर के साथ ही राजकुमार बना दिया। यह अवश्य है कि इन काम में उसे बीस साल लग गए। यदि आप अपने कपड़े लाउन्ड्री में दे आते और फिर उन्हें ज्यों के त्यों बीस साल के बाद वहाँ से वापस ले आते तो आपको कैसा मालूम होता? बड़े दुख की बात है कि हम अपने गन्दे कपड़ों से कहीं अधिक गन्दे हैं। परन्तु हमारा प्रभु हमें तब तक धोता रहता है जब तक कि हम उसके समान न हो जायें। परमेश्वर तब तक सन्तुष्ट नहीं हो सकता जब तक कि हम उसके पुत्र के रुप में न ढल जायें।

क्या आप उसका चुना हुआ पात्र बनना चाहते हैं? क्या आप तब तक धोए जाते रहने को तैयार है जब तक कि पूरे तौर से शुद्ध न हो जायें और वह पूरा सन्तुष्ट न हो ले?

अध्याय : ३

चुना हुआ पात्र

मैं चाहता हूँ कि आप प्रेरित॰ ६:५ के शब्दों को हृदयंगम कर लें- "...और उन्होंने स्टीफेन को चुन लिया।" पवित्र आत्मा के निर्देशन में स्टीफेन नामक मनुष्य सारी जनता के द्वारा चुना गया। लोगों ने उसका चुनाव मतदान के द्वारा नहीं किया, बल्कि उन्होंने एकमत हो कर उसे निर्विरोध चुन लिया। ग्रीक भाषा में इस चुनाव शब्द का तात्पर्य है 'साम्मिलित रुप से बिना किसी वैर-विरोध के चुन लेना।' कोई विवाद, कोई निरुत्साहिता, कोई झगड़ा उसके चुनाव में नहीं हुआ। सब लोगों ने जाना कि वह चुन लिया गया। 'स्टीफेन' शब्द का अर्थ होता है मुकुट, और हम देखते है कि उस व्यक्ति का जीवन कैसा विजयी था - यद्यपि वह थोड़े ही दिनों तक जीवित रहा। परमेश्वर का यह एक जन अपने छोटे जीवन काल में जितनी महानता अर्जन कर सका उतनी तो हम कई सालों तक प्रभु की सेवा करते रहने पर भी नहीं कर पाए हैं। अतएव वह तो निश्चय की मुकुट अर्थात् महिमा का मुकुट पाने का अधिकारी था।

स्टीफेन के विषय में हमें अधिक नहीं बताया गया है। हम उसके माता-पिता, परिवार अथवा योग्यताओं के विषय में कुछ भी नहीं जानते हैं। एक चमकते हुए तारे के समान वह अचानक प्रकट हुआ और वह सबसे पहला शहीद हुआ जिसने मृत्यु के समय प्रभु यीशु मसीह का नाम लेते हुए अपना जीवन बलिदान कर दिया।

स्टीफेन के चरित्र और सेवा के द्वारा आत्मिक चुनाव का अर्थ स्पष्ट हो जाता है। क्या हम भी उसी के समान चुने जाने की इच्छा रखते हैं, अथवा स्वर्गीय आह्वान के साथ परमेश्वर के द्वारा बुलाया जाना चाहते हैं? क्या आपके प्राणों में वह प्यास हे जो हम भजन सं॰ १०६:१ में भजन संहिताकार के जीवन में पाते हैं जहाँ इन शब्दों के साथ उसका जीवन-संगीता फूट पड़ता है – "हे प्रभु, स्तुति प्रशंसा तुम्हारी हो!" स्तुति एक स्वर्गीय वस्तु है। अनन्तकालीन आशीषों, स्वर्गीय, चिरस्थायी और तेजोमय पदार्थों के लिए परमेश्वर की स्तुति-प्रशंसा करते हैं, केवल पार्थिव वस्तुओं के लिए नहीं। यदि हम विजयी

जीवन व्यतीत करना चाहते हैं तो हमें सर्व प्रथम इस बात को समझ लेना है कि परमेश्वर के लोगों में गिने जाने का क्या तात्पर्य है। 'हे प्रभु, अपनी उसी कृपा के अनुसार मेरी सुधि ले जो तू अपनी प्रजा पर करता आया है। अपना उद्धार लेकर मेरे पास आ।'

क्या आपको यह आत्मिक विश्वास है कि आप स्वर्गीय जन हैं, आप अद्भुत व्यक्ति हैं, आप परमेश्वर के चुने हुए जन हैं, एक ऐसी जाति के हैं जिसे परमेश्वर ने अपने शक्तिशाली हाथों से खींचकर निकाला है और जो एक अद्भुत स्वर्गीय निधि बन गए हैं? 'अद्भुत निधि' शब्द पर ध्यान दें। मनुष्य के चुनाव का मापदण्ड है – प्रतिष्ठा, उच्च पद, सम्पत्ति और ख्याति। परन्तु परमेश्वर का मापदण्ड एकदम भिन्न है। यद्यपि हम मैले चिथड़े के समान हैं, पाप के कारण हमारा विनाश हो चुका है, हम एकदम तुच्छ हैं, निरर्थक हैं, तथापि वह कहमा है - 'हे मेरे पुत्र, मेरी पुत्री, मैं चाहता हूँ कि तू मेरी अद्भुत निधि बन जा। यदि हम अपने आपको उसके हाथों में समर्पित कर दें तो वह अनन्त कालीन कार्यों के लिए आपका और मेरा व्यवहार जिस रुप में कर सकेगा उसे ज्ञात है। अतएव परमेश्वर के हाथ को न छोड़े, जबकि उसी की यह इच्छा है कि वह आप को चुने। भजन सं॰ १०६:४, ५ में गीतकार कहता है 'ताकि मैं तेरे चुने हुओं का कल्याण देख सकूँ, तेरी, प्रजा के आनन्द में आनन्दित हो जाऊँ और तेरा उत्तराधिकार पाकर तेरी महिमा का गुणगान करूँ।' ये सब बातें स्टीफेन के जीवन को गौरवान्वित बना चुकी है। उसने अपने को परमेश्वर का चुना हुआ पात्र बनाकर अनेकों व्यक्तियों के जीवन में स्वर्गीय आनन्द का संचार किया तथा एक विश्वासी के रुप में सभी सन्तगणों के साथ महान स्वर्गीय उत्तराधिकार का भागीदार बनकर महिमान्वित हुआ है।

मुझे १८३६ के अपने मसीही जीवन के उन प्रारम्भिक दिनों की याद है जबकि मेरे विश्वास-परिवर्तन के पश्चात् स्टेशन पर मेरे पिता मुझसे मिले। उन्होंने मुझसे कहा था - 'हमें इस बात से बिल्कुल विरोध नहीं है कि तुम मसीही बन गए, पर मैं तुमसे विनती करता हूँ कि जब तुम अपने शहर में आओ तो यह न कहो कि मैं मसीही हूँ। तुम बाइबिल पढ़ो, प्रार्थना करो तथा और जो चाहो करो, परन्तु यह न कहो कि मैं मसीही हूँ। जब तुम अपने

शहर से दूर चले जाओ तो तुम्हारा जी जो चाहे कहा करो।' मैंने उनसे कहा - 'पिताजी, प्रभु यीशु मेरा जीवन है। उसे नकार कर मैं कैसे जीवित रह सकता हूँ। यदि मैं साँस न लूँ तो मैं भौतिक रुप से जीवित न रहूँगा। वह मेरा जीवन है, और यदि मैं उसका इन्कार करुँ तो घंटे भर में ही मेरी मृत्यु हो जायगी।' तब उन्होंने मेरे सामने दूसरा प्रस्ताव रखा - 'यदि तुम्हारा ऐसा ही विचार है, तो तीन महीने के लिए कोई नौकरी पकड़ लो। तब लोग यह कहेंगे कि इसे नौकरी थी, परन्तु मसीही होने पर इसने नौकशी छोड़ दी। अन्यथा, लोग यही कहेंगे कि तुम्हें कोई काम न मिला, इसीलिए मसीही बन गए।' मैंने कहा - 'यदि मैं एक सप्ताह अथवा एक दिन के लिए भी नौकरी पकड़ लूँ तो सम्भव है कि परमेश्वर का आदर कर सकने में असफल होने के कारण मैं भटक जाऊँ। परमेश्वर की दृष्टि में एक आत्मा का मूल्य सारे जगत की सम्पत्ति से भी अधिक है। इसी रुप से परमेश्वर स्टीफेन के जीवन के द्वारा स्वर्गीय तथ्यों के आत्मिक अर्थ समझने की शिक्षा प्रदान करता है। यह स्टीफेन एक अपरिचित व्यक्ति था जिसके परिवार, जन्मस्थान, देश अथवा योग्यताओं के सम्बन्ध में हम कुछ भी नही जानते हैं। परन्तु वह परमेश्वर की दृष्टि में अत्यन्त बहुमूल्य था।

संसार में जो लोग महान बनना चाहते हैं वे जगत में प्रसिद्ध होकर अपना नाम कमाने के लिए बड़ा कठोर परिश्रम करते हैं। जब वे एम.एल.ए. बनना चाहते हैं तो वे उसके लिए बहुत धन खर्च करते हैं, इधर-उधर आते जाते हैं तथापि जब वे काऊन्सिल में प्रविष्ट होते हैं तो उन्हें बैठने के लिए केवल एक कुर्सी मिलती है। सभाओं में वे केवल बैठे रहते हैं और समय-समय पर उन्हें अपना हाथ उठाना पड़ता है। उनके हृदय में देश के लिए कोई वास्तविक चिन्ता नहीं होती और न उस काम के लिए उन्हें कोई योग्यता ही होती है। वे केवल अपने नाम के सामने एम.एल.ए. अक्षरों को लिखा रखना चाहते हैं। बड़े आश्चर्य की बात है कि आदमी केवल नाम के लिए इतना कठोर परिश्रम करे।

प्रेरित॰ के इस पद से ज्ञात हो जाता है कि आप और में स्वर्गीय प्रसिद्धि और अनन्त कालीन नाम के लिए किस प्रकार चुने जा सकते है। उदाहरण के लिए मान लीजिए कि कुछ विश्वासी किसी गाँव में रहते हें और आप वहाँ जाकर पूछते हैं – "क्या आप लोग

सुब्बा राव को जानते है?" और वे उत्तर देते हैं - 'नहीं'। यद्यपि वह गाँव छोटा है, तथापि वहाँ के लोग उसका नाम नहीं जानते। किन्तु जब ऐसे ही आदमी को परमेश्वर चुन लेता है तब कैसी भिन्नता आ जाती है! फिर जब आप स्वर्ग जाकर किसी स्वर्गदूत से पूछते हैं - 'क्या आप सुब्बाराव को जानते है?' तो वह आपको उत्तर देगा - 'वे हमारे स्वर्गीय राजा के द्वाराचुने गए हैं और हमारे राजा ने स्वयं हम सब को उनके चुनाव के विषय में बताया है!' इस पृथ्वी पर मनुष्य तुच्छ हो सकता है, परन्तु जब वही व्यक्ति परमेश्वर के द्वारा चुना जाता है तो स्वर्गीय सेना बड़े आनन्द और प्रसन्नता के साथ उसका स्वागत और अनुमोदन करती है। दुख की बात तो यह है कि उसका चुना हुआ पात्र बनने की इच्छा रखनेवाले विश्वासी बहुत ही कम हैं। बहुत से लोग ऐसे हैं जो अपने आप को बहुत ही अच्छा मसीही समझते हैं। वे इस बात से ही सन्तुष्ट हो जाते है कि वे सप्ताह में एक बार सेवा में भांग लेते है और महीने में कुछ पैसे भी दे देते हैं। 'हम किसी का नुकसान नहीं करते,' वे कहा करते हैं - 'हम झूठ नहीं बोलते; हम किसी को धोखा नहीं करते; हम शान्तिपूर्वक जीवन बिताते, और प्रति रविवार पैतालिस मिनट के लिए चर्च जाते है; परन्तु प्रार्थना सभाओं में भाग लेने के लिए हमारे पास समय नहीं। और ऐसी जगहों में जाते भी हैं तो हम सो जाते है।' आपका मानदण्ड ऊँचा हो सकता है। परन्तु परमेश्वर इससे भी अधिक चाहता है। वह आपको प्यार करता है। उसने आपको अपने रक्त से खरीदा है ताकि वह आपको अपना चुना हुआ पात्र बनाए जो उसकी अद्भुत निधि, उसकी अंगूर की बारी, उसके सहकर्मी और उसके अनन्त कालीन भागीदार बनें।

पहली आवश्यक शर्त तो यह है कि आप स्टीफेन के समान बनें जो अपनी मर्यादा के लिए काम न करता हो। कुछ लोग ऐसे है जो सम्मान मिलने पर तो दिन-रात काम करेंगे, किन्तु यदि वे सम्मान न पायें तो वे पीछे हट जायेंगे और कुछ भी न करेंगे। वे केवल नाम कमाने के लिए काम करते हैं। किन्तु हमें बताया गया है कि स्टीफेन ने सम्मान अथवा मर्यादा के लिए काम न किया। उसने चुपचाप प्रेम-पूर्वक सेवा की (प्रेरित॰ ६: १, २)।

जब शिष्यों की संख्या बढ़ी और प्रभु बड़े सामर्थ्य के साथ काम करने लगा तो शैतान ने इब्रानियों के विरुद्ध ग्रीसवासियों के मन में असन्तोष और कुड़कुडाहट उत्पन्न कर दी; क्योंकि दैनिक सेवा के काम में उनकी स्त्रियाँ उपेक्षित थी। इस प्रकार शैतान परमेश्वर की प्रजाओं के बीच बड़ी सूक्ष्मता पूर्वक झगड़ा और विवाद ले आया था। इन पूरी शताब्दियों में देखा गया है कि शेतान परमेश्वर के काम में बाधा पहुँचाने तथा उसके दासों को सच्ची सेवा से वंचित रखने के लिए दो हथियारों का व्यवहार करता आ रहा है। प्रथम तो यह कि जब परमेश्वर कोई काम शुरु करता है और लोगो में उसका सामर्थ्य प्रकट होता हुआ दीख पड़ने लगता है तो परमेश्वर के जनों में कुड़कुड़ाहट, दोषारोपण और विवादों का प्रवेश हो जाता है; और इसप्रकार प्रभु का काम अस्त-व्यस्त होकर पिछड़ जाता है। इस प्रकार के कुड़कुड़ाने वाले विश्वासियों में कुछ लोगों के जीवन में परमेश्वर का आत्मा बुझ जाता और उसके काम में बाधा पड़ जाती है।

दूसरी बात यह है कि शैतान परमेश्वर के दासों को वचन की सेवा करने से रोक रखने की कोशिश करता है। वह उन्हे भोजन की सेवा में लगा देता है। शैतान ने यह चेष्टा की है कि प्रेरित गण अपनी मुख्य सेवा का परित्याग करके इस पेट की सेवा में लग जायें। संसार के विभिन्न देशों के परमेश्वर के सेवकों के साथ यही दुखद घटना देखी जाती है। परमेश्वर ने उन्हें प्रचारक, शिक्षक और धर्मोपदेशक बनने के लिए बुलाया है, पर अब वे भोजन परोसने की सेवा में लग गए है। कुछ दिनों तक वे विश्वासयोग्य रहते हैं, किन्तु जब काम बढ़ता है तो वे संसार के साथ उलझ जाते हैं। परमेश्वर के कुछ अन्य दास हैं जिनकी पत्नियाँ सांसारिक विचार-धारा की हैं और घर में शान्ति स्थापना के लिए उनके पतियों को उनके लिए नौकरी करनी पड़ती है। विवाह के पहले ये व्यक्ति परमेश्वर के वचन को अपने जीवन में प्रथम स्थान देते, अपना अधिकांश समय प्रार्थना में लगाते और उत्साह से परिपूर्ण रहते थे। पर अब वे सूख गए और धीरे-धीरे किन्तु स्थिरतापूर्वक नीचे की ओर उतरने लगे। पहले तो एक बच्चा हुआ, फिर दूसरा, तीसरा, और इसी प्रकार बढ़ते-बढ़ते उनकी संख्या पाँच तक पहुँच गई। ऐसे लोगों का सारा समय बच्चों के कपडे धोने में बीत

जाता है। यही उनकी सेवा का स्थान ले लेता है। जब आप उनसे पूछेंगे कि आपकी सेवा में फल क्यों नही लगता तो वे उत्तर देंगे कि भूमि बड़ी कठोर है। परन्तु परमेश्वर का वचन इस दुर्बलता के वास्तविक रहस्य का उद्घाटन करता है। प्रथम वस्तुओं को प्रथम स्थान देना ही पड़ेगा। पर हम उसके अनुग्रह से ही ऐसा कर सकते हैं। वही हमें बुद्धि देगा, जैसे उसने अपने दासों को प्रेरित ६:५ में स्वर्गीय बुद्धि दी थी। 'यह बात सारी कलीसिया को पसन्द आई' और लोगों ने स्टीफेन जैसे व्यक्तियों को चुना जो चुपचाप घर-घर जाकर लोगों की सहायता तथा विधवावों और निर्धनों की देखभाल किया करते थे। ये सज्जन किसी से परिचित नहीं थे; उनका जन्म और इतिहास रहस्य की बातें थी। जब समय आया तो सारी जनता ने एक स्वर से उन्हें चुन लिया क्योंकि वे उनके जीवन का निरीक्षण कर रहे थे और उन्होंने इस बात पर भली भाँति गौर कर लिया था कि वे लोग बिना किसी दिखावे के सेवा किया करते थे और साथ ही साथ वे पवित्र आत्मा से भरपूर होकर प्रत्येक सेवा के लिए स्वर्गीय बुद्धि से परिपूर्ण थे।

हमारी सेवा चाहे कितनी ही छोटी अथवा कितनी ही बड़ी क्यों न हो, हमें भी पवित्र आत्मा से अभिषिक्त होने की आवश्यकता है। यह सेवा चाहे विधवाओं और अनाथों की सेवा हो, अथवा भवन की देखभाल करने का, अथवा भोजन परोसने, चटाई बिछाने अथवा परमेश्वर के भवन में ऐसी ही कोई दूसरी सेवा हो, किसी भी प्रकार की सेवा क्यों न हो, हमारा अभिषिक्त तथा बुद्धि और पवित्र आत्मा से भरपूर होना अनिवार्य है। मनुष्य से महिमान्वित होने की आवश्यकता नहीं। परमेश्वर के भवन में हम क्या करें अथवा उसकी कौन सी कौन सी सेवा करें-इस बात का पता लगने के लिए हमें पवित्र आत्मा, बुद्धि और स्वर्गीय अभिषेक की आवश्यकता है। हम जो कुछ भी करें वह परमेश्वर की सेवा समझ कर करें, मनुष्य की सेवा समझा कर नहीं।

स्टीफेन की यह इच्छा कि वह प्रभु और उसने जनों की सेवा करे। वह प्रचारक बनने की कामना नहीं कर रहा था। कुछ लोग ऐसे हैं जो केवल प्रचारक बनने की ही कामना नहीं करते बल्कि वे रविवार को, तथा बड़ी-बड़ी सभाओं में उपदेश करना चाहते

हैं। जब वे बोलते रहते हैं अथवा अपनी बाहों को इधर-उधर चलाते रहते हैं तो उन्हें बड़ा आनन्द मिलता है। बड़ी-बड़ी सभाओं में भाषण देने के निमंत्रण को चे प्रसन्नता-पूर्वक स्वीकार कर लेते हैं। वे कहते हैं – "अच्छा, इस सभा की सेवा करने में मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी।" पर इन्हीं व्यक्तियों को जब घरेलू सेवा में वचन देने को कहा जाता है तो वे कहते हैं – "भैया जी, आज मेरी तबियत अच्छी नहीं है," अथवा, "मेरी स्त्री ने मुझे जल्दी घर आने को कहा है क्योंकि मेरे बच्चे की तबियत थोड़ी ठीक नहीं है, अतएव मुझे क्षमा करें।" ऐसे लोग एक बहुत बड़ा भीड़ होने पर ही वचन दे सकते हैं। परन्तु स्टीफेन उस प्रकार का व्यक्ति नहीं था। वह प्रचारक के रुप में प्रसिद्ध होने की लालसा नहीं रखता था। वह भोजन परोसने तथा गरीबों की सेवा करने के काम से ही सन्तुष्ट था। वह आनन्द के साथ सेवा करता था और लोगों को यह बात मालूम थी कि वह पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण है। वह जानता था कि किस जगह कैसे व्यवहार करना चाहिए, किस प्रकार नम्र, कोमल, सुशील और सावधान होना चाहिए। छोटी-छोटी बातों तथा उनके करने के ढंग से, मनुष्य की बुद्धि का अन्दाज मिलता है।

क्या आप भी स्वर्गीय निर्वाचित पात्र बनना चाहते हैं? तो आप साधारण कामों को भी आनन्द के साथ करने को तैयार हों; मनुष्य के लिए नहीं, परमेश्वर के लिए। परमेश्वर स्वयं आपको अपने पवित्र आत्मा और बुद्धि से भर देगा। इसी उपाय से स्टीफेन परमेश्वर का चुना हुआ पात्र बना। प्रेरित॰ ६:८ - 'विश्वास और समर्थ से परिपूर्ण होकर स्टीफेन ने लोगों के बीच बड़े-बड़े अद्भुत काम किए।' केवल विधवाओं की देखभाल और रुपये-पैसे का हिसाब रखने के लिए उसकी नियुक्ति हुई थी। परन्तु शीघ्र के पास जा-जाकर वह चन्दा माँगा नहीं करता था - 'सब लोगों ने मिलकर मुझे इन लोगों की देख-भाल करने के काम पर नियुक्त किया है। यरुशलेम में इतनी विधवाएँ, इतने बच्चे-बच्चियाँ और शिशु हैं। उसके पालन-पोषण के लिए अधिक-अधिक दान दीजिए।' कल्पना कीजिए कि आज का स्टीफेन अमेरिका जाकर, इधर-उधर दौड़-धूप करते हुए, अपने दु:ख और दरिद्रता की लम्बी-लम्बी कहानियाँ सुना रहा है – "इन विधवाओं और अनाथों के लिए डॉलर

दीजिए।" अमेरिका से डॉलर की भीख माँगने वाले भिखारियो! विश्वास से परिपूर्ण मनुष्या बनो, परमेश्वर पर भरोसा रखना सीखो। वह प्रेमी, सामर्थ्यवान और अपरिवर्तनशील परमेश्वर है। वह सब कुछ कर सकता है। उनके दास क्यों भीख माँगें? कारण यह है कि उनमें विश्वास का अभाव है। स्टीफेन विश्वासपूर्ण व्यक्ति था और विश्वास की आँखों से उसने देख लिया था कि उसकी सारी आवश्यकताएँ पूरी हो चुकी हैं। परमेश्वर ने अद्भुत काम किए और इस प्रकार यह घोषित किया कि स्टीफेन उस काम को करने के लिए उसका चुना हुआ पात्र है। क्या परमेश्वर ने आपको चुना है?

यदि आप उसकी इच्छा पूरी करने को तत्पर हैं तो वह आपको चुन कर विश्वासपूर्ण व्यक्ति बना देगा। आपको भी परमेश्वर के कामों का अद्भुत दृष्य दिखाया जायगा। वह जावित परमेश्वर है। प्रेरित॰ ६:१० में लिखा हुआ है - 'परन्तु उस ज्ञान और आत्मा का, जिससे वह बातें करता था, लोग सामना न कर सके।' स्टीफेन अपना काम करता गया। साथ ही साथ जो उससे मिलने उन्हें वह वचन भी सुनाता था। वह एक नम्र और साधारण व्यक्ति था। साथ ही साथ वह परमेश्वर के आत्मा से परिपूर्ण व्यक्ति भी था। वह स्वर्गीय ज्ञान की ऐसी बातें सुनाता था जिससे बड़े-बड़े विद्वानों के मुँह बन्द हो जाते थे। परमेश्र की आज्ञा का आप जितना ही पालन करेंगे उतना ही वह आपको स्वर्गीय बुद्धि प्रदान करेगा ताकि आप सभी परिस्थितियों का सामना करते हुए उसका चुना हुआ पात्र बन सकें।

यही हम सब की आन्तरिक अभिलाषा होनी चाहिए। क्या आप उसकी पुकार को न सुनेंगे ताकि वह आपको अपना चुना हुआ पात्र बना सके? तभी आप परमेश्वर के सामर्थ्य और आत्मा से परिपूर्ण व्यक्ति हो सकेंगे।

अध्याय : ४

साक्षी के रुप में चुना जान

स्टीफेन के जीवन के द्वारा परमेश्वर के चुनाव की जो अनुभूति हमने पाई है वह हमारी इच्छा, आज्ञाकारिता और विश्वास पर निर्भर करता है। मैं आपको अपना अनुभव बताना चाहता हूँ; क्योंकि मैं यह समझता हूँ कि यह एक महान और अद्भुत बात हे कि मेरे प्रभु ने मुझे चुन लिया है। मैं चाहता हूँ कि दूसरे लोग भी यह जान लें कि वे बड़े ही सरल हैं; नहीं तो जब वह उन्हें बुलाएगा तब वे उसकी आवाज सुन सकने में असमर्थ हो जायेंगे।

कनाडा के विनिपेग शहर में सन् १९३० ई॰ में अपने उद्धार पाने के शीघ्र ही बाद मैं एक रविवार को प्रात:काल सेवा में भाग लेने गया। सभा समाप्त होने पर जब मैं बाहर खड़ा था तो एक आदमी ने आकर मुझसे हाथ मिलाया। मैं उसके हाथ के मजबूत दबाव को अभी भी अनुभव कर सकता हूँ। उसने मुझसे कहा - 'भाई साहब, आप भारत जाकर प्रचार का काम क्यों नही करते?' मैंने उत्तर दिया - 'भाई, मैं एक इन्जीनियर हूँ। मैंने इन्जीनियरिंग पढ़ने में कई साल गुजार दिए। इससे भी बढ़कर बुरी बात यह है कि मैं बोलने में हकलाता और तुतलाता हूँ। भाषण देने में मुझे इतना डर लगता है कि मैं छोटे से दल के सामने भी खड़ा नहीं हो सकता। जब मैं लोगों को देखता हूँ तो मेरे घुटने काँपने लगते हैं। अब आप ही बताएं कि ऐसा हकलाने और तुतलाने वाला व्यक्ति प्रचारक कैसे बन सकता है?' उसने और कुछ तो नहीं कहा परन्तु उसके ये शब्द पूरे दो वर्षों तक मुझे बार-बार सुनाई पड़ते रहे। हाथ का वही दबाव मैं महसूस करता और वे हो शब्द मेरे कानों में गँजते - 'तुम क्यों नहीं ...? तुम क्यों नहीं ...?' मैंने प्रभु से कहा - 'हे प्रभु, मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं अपना सारा धन दे दूँगा । मुझे इस बात की बिलकुल इच्छा नहीं कि अपने लिए कोई महल बनाऊँ, और न तो मैं कोई आराम चाहता हूँ। मैं तुझसे यह प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं अपना सारा धन दे दूँगा। इस उपाय से मैं बहुत से प्रचारकों की नियुक्ति कर सकूँगा। परन्तु कृपा करके तू मुझे प्रचारक न बना!'

पर परमेश्वर ने मुझसे कहा - 'मैं तुम्हारा धन नहीं चाहता। मैं तो तुम्हे ही चाहता हूँ!' पूरे दो वर्षों तक ये शब्द मेरे पास बार-बार आते रहे। मैं समझ नहीं सका कि मेरे समान व्यक्ति जो इतनी दुर्बलताओं से भरा है कभी जन-साधारण की सभा में भाषण कैसे दे सकता है। अपने इच्छानुसार मैं अपनी जीभ को चला नहीं सकता। मैं एक पंक्ति भी गा नहीं सकता, और न संगीत का सा-रे-गा मुझे ज्ञात है। भला ऐसा व्यक्ति पब्लिक स्पीकर कैसे बन सकता है? अतएव मैं ने सोचा कि पैसे से ही मैं प्रभु की सेवा करुँगा। अपनी मूर्खता और अन्धेपन के कारण मैं पूरे दो साल तक परमेश्वर से तर्क-वितर्क करता रहा, इस बात को नहीं समझ सका कि मैं क्या कर रहा हूँ। मैं समझता था कि नौकरी करते रहना ही अच्छा है, पर परमेश्वर मेरे सम्बन्ध में इससे अच्छी बात सोच रहा था। वह अत्यन्त प्रमी है, धैर्यवान है, स्थिर है; यद्यपि हम उसे दुखी बनाते हैं, उसकी अवहेलना करते हैं, उसे चोट पहुँचाते हैं तथापि वह हमें नहीं छोड़ता। यह बड़े रहस्य की बात है कि आखिर हमारा परमेश्वर हमें क्यों चुने। कारण यह हे कि हम पर उसका अधिकार है। वह मेरा सृष्टिकर्ता हैं, उसका अनुसरण करते हैं तब हम उसके उस सामर्थ्य को जिससे वह हममें और हमारे द्वारा काम करता है, अधिक पूर्णता और भरपूरी के साथ जानेंगे।

यही बात मुक्ति के विषय में भी लागू होती है। मुझ जैसे महान पापी को परमेश्वर क्यों चुनेगा? १६१६ ई॰ का वह दिन मुझे याद है जब मैं पंजाब में था और अपनी अन्धता के कारण बाइबिल और मसीहियों के विरुद्ध घृझा प्रकट करने के लिए मैं ने पवित्र धर्मशास्त्र बाइबिल को चिथड़े-चिथड़े कर दिया था। मैंने परमेश्वर और उसके जनों के लिए अपशब्द का प्रयोग किया था, और फलस्वरुप मैं प्रत्येक दुष्ट साधन का दास बन गया था। तथापि मेरे प्रभु ने जब अपने आपको मुझ पर प्रकट किया तो उसने कभी यह कह कर मुझ पर दोषारोपण नहीं किया कि 'तुमने ऐसा किया, वैसा किया!' बल्कि मैं स्वयं अपने पापों को देखने लगा। उसकी उपस्थिति मात्र ने मेरे पापों को प्रकट कर दिया। किसी ने मुझसे यह नहीं कहा कि मुझे क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। उसकी उपस्थिति ने मुझ में से गलत धारणाओं और बुरी इच्छाओं को भी दूर कर दिया। वह स्वयं

मेरे पास आ गया, मैं कभी उसके पास न गया। और वास्तव में मै तो उससे दूर ही चला जा रहा था। मैंने उसकी और अपनी पीठ आड़ ली थी। पर, मेरे अनजाने ही वह कदम-कदम पर मेरा पीछा करता आ रहा था।

मैं प्रभु को धन्यवाद देता हूँ कि सन् १६२६ ई॰ में, १६ दिसम्बर को सर्व सामर्थी प्रभु ने मुझ से इन शब्दों को कहा - 'यह मेरा शरीर है जो तुम्हारे लिए तोड़ा गया और नई साक्षी का यह मेरा रक्त है जो तुम्हें पापों से मुक्त करने के लिए बहाया गया।' मैंने इन शब्दों को अपने कमरें में ही सुना, मुझे न तो किसी सभा में जान पड़ा और न किसी ने मुझे कुछ उपदेश दिया अथवा सुसमाचार-पुस्तिका दी। मैं तो यह भी नहीं जानता था कि 'उद्धार' और 'नया जन्म' शब्दों का अर्थ क्या है। मैं यह भी नहीं जानता था कि 'मत्ती' 'मरकुस' 'लूक' और 'यूहन्ना' कौन हैं। 'मत्ती' शब्द का अर्थ क्या है, यह कोई पुरुष है अथवा स्त्री, नगर है अथवा गाँव, आदि बातों का मुझे कोई ज्ञान नहीं था। आप यह जान कर मुझ पर हँस सकते हैं, पर मैं तो ऐसा ही अन्धा था। उस दिन प्रातः काल, जब मेरे प्रभु न मेरे पापों को प्रकट कर दिया, मैंने कहा - 'मुझ जैसे पापी के लिए क्या कोई आशा है? मेरे पास पैसे हैं, पर शात्नि नहीं। मैंने शिक्षा पाई है, पर यह तो मेरे जीवन की पराजय के सिवा और कुछ नहीं। बाहरी तौर पर तो मैं सभ्य व्यक्ति हूँ, परन्तु भीतरी तौर पर महा दुष्ट। हे प्रभु, क्या मुझ जैसे व्यक्ति के लिए कहीं कोई आशा है?'

उसी समय बड़ी स्पष्टता ते साफ-साफ और अत्यन्त प्रेम से भरे हुए उसके ये शब्द मुझे सुनाई पड़े - 'यह मेरा शरीर है जो तुम्हारे लिए तोड़ा गया और नई साक्षी का यह मेरा रक्त है जो तुम्हें पापों से मुक्त करने के लिए बहाया गया।' मैंने उत्तर दिया - 'हे परमेश्वर, मैं इतना बेवकूफ हूँ कि इन शब्दों का अर्थ समझ नहीं सकता।' तब एक आवाज मेरे कानों में सुनाई पड़ी -'मेरे पुत्र, जाओ, तेरे पाप क्षमा हो गए हैं।' समस्या का समाधान हो गया। बस, इसी रीति से उसने मुझे चुना। मैं निन्दक था, हर पाप का दास था, आत्मिक रुप से एकदम अन्धा था, तथापि उसने मुझे ढूँढ़ा और चुन लिया। मैं जानता हूँ! मैं विश्वास करता हूँ। वह मेरा है और मैं उसका हूँ! उस प्रेमी उद्धारकर्ता की ध्वनि आपके कानों में भी पड़े।

जैसे-जैसे आप उसकी आज्ञा का पालन करते जायेंगे, उसका अनुसरण करते रहेंगे, वैसे-वैसे वह आपको स्वयं अपनी इच्छओं से अवगत करता जायेगा।

हमने इस पर विचार किया कि प्रभु ने स्टीफेन को कैसे चुना। भजन सं॰ १०५, ४, ५ में हमने यह भी देखा कि भजन संहिताकार तीन बातों के लिए लालायित है - 'ताकि मैं तेरे चुने हुओं का कल्याण देख सकूँ, तेरी प्रजा के आनन्द में आनन्दित हो जाऊँ और तेरा उत्तराधिकार पाकर तेरी महिमा का गुणगान करूँ।' यह सच्ची आत्मिक प्रार्थना है। अनेकों बार हम केवल नाश होनेवाली सांसारिक वस्तुओ के लिए प्रार्थना करते हैं। जब हम स्कूल कॉलेज में पढ़ते हैं तो परीक्ष के पहले हमारी प्रार्थना होती है - 'हे परमेश्वर, परीक्षा में उत्तीर्ण होने में मेरी सहायता कर।' नवयुवक-नवयुवती प्रार्थना करते हैं - 'हे प्रभु, मुझे ऐसी पत्नी अथवा ऐसा पति दीजिए जो उच्च शिक्षा-प्राप्त हो, कम से कम बी.ए. तो अवश्य हो।' एक नवयुवक ऐसी पत्नी पाने के लिए भी प्रार्थना कर सकता है जो अधिक मोटी अथवा अधिक लम्बी न हो, गोरे रंग की हो और नि:सन्देह वह ग्रेजुएट भी हो, भले ही वह स्वयं काला कलूठा और मैट्रिक फेल ही हो! कुठ दूसरे लोग अपनी नौकरी अथवा पदोन्नति के लिए प्रार्थना करते हैं। वे सदा-सर्वदा रहनेवाली यथार्थ वस्तुओं के विषय में कोई ज्ञान नहीं रखते। उचित तो यह हे कि वे केवल उन बातों के लिए प्रार्थना करें जो भजन सं॰ १०६:५ में उल्लिखित हैं, तो प्रभु उन्हें अन्य वस्तुएँ भी अवश्य ही प्रदान करेगा।

हमने देखा कि प्रभु ने स्टीफेन को कैसे चुना। वह एक अत्यन्त साधारण व्यक्ति था जिसके परिवार, माता-पिता अथवा परिस्थितियों से हम तनिक भी परिचित नहीं हैं। वह अचानक दृश्यपट पर उपस्थित होता है, और हम इस चुने हुए पात्र को साधारण सेवाओं में लीन पाते हैं, जो निर्धन लोगों तथा विधवाओं की सेवा जैसे मामूली कामों में लग जाता है और किसी पुरस्कार की आशा नहीं करता। तथापि धीरे-धीरे सब लोग जान गए कि वह सचमुच में कोई साधारण व्यक्ति नहीं था। उसकी आन्तरिक इच्छा परमेश्वर को प्रसन्न रखने की थी और उसका जीवन विजय से परिपूर्ण था। उसने परमेश्वर की आज्ञा का

पालन करना अपना लक्ष्य बनाया और इस कारण वह पवित्र आत्मा, बुद्धि, विश्वास और सामर्थ्य से परिपूर्ण हो गया। यह अधिकार उनके लिए है जो उसके द्वारा चुने जाते है। यदि आपके हृदय में प्रभु की इच्छा को पूरी करने की अभिलाषा है तो आप परमेश्वर से प्रार्थना करें। तब आप देखेंगे कि वह अपनी रीति के अनुसार आपके मन की सारी इच्छाएँ, पूर्ण करेगा। अपनी आशाओं को पूर्ण करने के लिए आपको चिल्लाने और युद्ध करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। उसकी आज्ञा का पालन करना और उसके वचन के अनुसार चलना शुरु कर दें, प्रभु के वचन को अपने हृदय में ग्रहण करें, तो आप देखेंगे कि जिन गुणों को प्राप्त करने की आकांक्षा आप रखते थे वे आपके जीवन में प्रकट हो गए हैं। परमेश्वर के उद्देश्य के अनुसार आप उसके चुने हुए पात्र बन जायेंगे।

प्रेरित॰ ६:१३-१५ में हम देखते हैं कि प्रजा के कुछ मुख्य व्यक्तियों ने स्टीफेन के विरुद्ध झूठे गवाहों को खड़ा किया। प्राचीनों और विद्वान लोगों ने आग-बबूला होकर स्टीफेन पर आक्रमण किया और उसे पकड़ कर महासभा के सम्मुख उपस्थित किया। लोग उस पर दोषारोपण करने लगे। जब वे लोग उसके विरुद्ध झूठी बातें कह रहे थे तो उसी समय महासभा के सब लोगों ने उसके चेहरे की ओर देखा, और वे लोग उसे स्वर्गदूत की तरह प्रकाशपूर्ण देख कर आश्चर्य से भर गए। एक व्यक्ति क विरुद्ध इतने सारे लोग थे। सारी महासभा के लोग उसके विरोधी बन गए। एक-एक करके प्रत्येक व्यक्ति ने उस पर झूठा दोषारोपण किया। तौभी उसका मुखमंडल स्वर्गदूत सा चमकता रहा। उसका चेहरा और भी अधिक प्रकाशपूर्ण तब हुआ जब उसे भयंकरतापूर्वक सताया जा रहा था। कैसा उद्धार! कैसा पात्र! दैदीप्यमान मुखमंडल प्राप्त करने का कितना बड़ा अधिकार!

संसार सौदर्यं प्रसाधन पर बहुत ही धन व्यय करता है। पुरुष और स्त्री अपनी सुन्दरता को बढ़ाने के लिए क्रीम, पाउडर तथा साबुन इत्यादि का व्यवहार करते हैं। स्त्रियाँ शहर के अच्छे से अच्छे प्रसाधन कक्ष में प्रवेश करती हैं, लगभग ३०-४० मिनट वहाँ बिताती हैं ताकि वे वहाँ, क्रीम, पाउडर इत्यादि लगाकर चमकीले चेहरे से बाहर निकलें। परन्तु यह सौन्दर्य टिकाऊ नहीं होता। जब वे नाश्ता के लिए जाती हैं तो वहाँ ठण्डी कॉफी

तथा बासी उपमा परोसी जा सकती हैं। बस; तत्काल ही उनके चेहरे का रंग बदल जाता है! हो सकता है, वे सोच रही हों 'देखो मेरे केशों को, इनमें कितना सुगन्धित तेल डाला गया है, इन्हें कैसे घुंघराले बनाया गया है, मेरे वस्त्र कितने चमकीले हैं, मेरा मुखड़ा कैसा चमक रहा है, तौभी उन्हें मुझे ऐसा बासी भोजन देने का दुस्साहस हुआ!' अब वह चमकीला चेहरा कहाँ चला गया?

सम्भव है, आप दूसरों को अपने विरोध में बोलते हुए सुनें; अथवा आप यह अफवाह सुनें कि किसी ने आपके विषय में कोई झूठी और लज्जाजनक बातें कही हैं और इस कारण आपका चेहरा उतर जाता है, आप दुखी हो जाते हैं। पत्नी कहती है - 'आइए, चाय पीजिए।' किन्तु आप उत्तर देते हैं – 'मेरी इच्छा नहीं है।' वह आपको फिर बुलाती है, पर आप फिर कहते हैं - 'मेरी इच्छा नहीं है। इत्यादी, इत्यादी।' आपको नींद नहीं आती। आप आहें भरते हैं। परन्तु जब परमेश्वर के द्वारा आपका चुनाव होता है, आप अभिषिक्त होकर परिपूर्ण पात्र बन जाते हैं तो आपसे जितना ही दुर्व्यवहार किया जाता है आपका चेहरा उतना ही अधिक चमकीला बनता जाता है। भले ही लोग आपसे घृणा करें, आपके विषय में बहुत सी असत्य और झूठी बातें बोलते हों तौभी आपका चेहरा स्वर्गदूत की भाँति चमकेगा। दरिद्रता में अथवा जिस किसी परिस्थिति में आप क्यों न हों आपका चेहरा चमकता ही रहेगा; चाहे आपको ठंढी कॉफी पीने को मिले अथवा बासी भोजन खाने को मिले तौभी आपका चेहरा चमकता रहेगा। जहाँ कहीं भी आप जायें, आपका चेहरा चकता रहेगा। प्रत्येक विश्वासी के लिए यही परमेश्वर की मनसा है।

जब हम प्रभु यीशु के पास आते हैं तो उसका प्रकाश सब से पहले हृदय में प्रवेश करेगा, फिर चेहरे पर आएगा और तब हमारा पथ आलोकित हो उठेगा। इस प्रकार यह स्वर्गीय प्रकाश तीन ओर से काम करता है। क्या इस अर्थ में आप परमेश्वर का चुना हुआ पात्र बने हैं? क्या आपका चेहरा ऐसा चमकता है कि आपकी पत्नी यह कहने को बाध्य हो - 'क्या ये सचमुच मेरे पति हैं?' क्या ये वही व्यक्ति हैं? पहले तो वे कठोर दीख पड़ने वाले

व्यक्ति थे, पर अब तो इनके मुख पर कोमलता की झलक है।' हुआ क्या? प्रभुने, उपदेशकों ने नहीं और न उनके उपदेश ने, बल्कि जीवित परमेश्वर ने आपको चमकता हुआ चेहरा दिया। और यदि ऐसी बात है तो आपका चेहरा दिन-ब-दिन अधिकाधिक प्रकाशयुक्त होता जायेगा। जाँच-परीक्षा, दु:ख-कष्ट तथा कठिनाइयों के बावजूद भी आप चमकीले बनते चले जायेंगे। ऐसी ही प्रकाशपूर्ण मुखाकृति से हम अपने शत्रुओं को पराजित कर देते हैं। स्टीफेन को बचाने तथा उसका पक्ष समर्थन करने के लिए किसी वकील की आवश्यकता नहीं थी। उसका प्रकाशयुक्त मुख-मंडल ही उसके लिएवकील का काम कर रहा था, अर्थात उसका मुकद्दमा लड़ रहा था। आपके साथ भी यही बात होनी चाहिए। भले ही दूसरे लोग आपसे घृणा करें, आपको सताएँ अथवा आपसे दुर्व्यवहार करें तौभी आपके चेहरे पर चमक होनी ही चाहिए जो उनके सामने आपकी गवाही दे सके। (२ कुरि॰ ४:६)। आप प्रार्थना में अपना जितना ही अधिक समय लगाऐंगे उतना ही अधिक आपके चेहरे पर दीप्ति बढ़ेगी। आपके अनजाने ही, दूसरे लोग आपके चेहरे पर परमेश्वर की ज्योति देखेंगे। उस समय आप अपने कष्टों के लिए भी प्रभु को धन्यवाद देंगे।

ध्यान पूर्वक देखिए कि प्रेरित॰ ७:२ में स्टीफेन अपना बचाव कैसे करता है। वह ऐसा नहीं कहता - 'हे शत्रुओं, सुनो।' वह कहता है - 'मेरे भाइयो, सुनो।' सारी जमात के लोग उसके विरोधी हैं, तथापि वह उन्हें 'भाई' कहकर सम्बोधित कर रहा है। साथ ही साथ उसका चेहरा भी प्रचुर प्रकाश से चमक रहा है। किसी प्रकार उसे ज्ञात हो गया कि लोग अपने मन में क्या सोच रहे हैं और उसके सन्देश से यह उत्तर मिला - 'महिमामय परमेश्वर इब्राहीम के सामने प्रकट हुआ जब कि वह हारान देश में बसने से पहले मेसोपोटामिया में था।' वह परमेश्वर को 'महिमामय परमेश्वर' कहता है। यहूदी लोगों को अपने पूर्वजों पर इतना गर्व था कि वे उन्हें 'हमारे इब्राहीम', 'हमारे इसहाक। 'हमारे याकूब', 'हमारे मूसा' इत्यादि, इत्यादि कहकर सम्बोधित करते थे। परन्तु उन्हें कभी यह ज्ञात नहीं हुआ कि

परमेश्वर इब्राहीम के सामने क्यों प्रकट हुआ। यहाँ अनेकों मसीही ऐसे हैं जो बड़े गर्व के साथ कहा करते हैं कि वे मूर्त्तिपूजक नहीं है। वे इस बात का घमंड करते हैं कि वे मसीह हैं। परन्तु वे 'मसीही' शब्द का अर्थ तक नहीं जानते। उन यहूदियों की दशा भी वैसी ही थी। उन्हें यह ज्ञात नहीं था कि परमेश्वर इब्राहीम के सामने क्यों और कैसे प्रकट हुआ। स्टीफेन ने पवित्र-आत्मा से परिपूर्ण होकर घोषित किया - 'परमेश्वर महिमामय परमेश्वर के रुप में इब्राहीम के सामने प्रकट हुआ।' किस उद्देश्य की पूर्त्ति के लिए ऐसा हुआ? इसीलिए कि प्रजा के रुप से भर दे। यही कारण है कि जब तम्बू और तत्पश्चात् मन्दिर बनने का काम समाप्त हुआ तो हम पढ़ते हैं कि 'परमेश्वर के तेज से वह स्थान भर गया।' (निर्ग॰ ४०:३४ और २ इति॰ ७:१) सुलेमान का मन्दिर और तम्बू-दोनों ही परमेश्वर के तेज से भर गए थे। परमेश्वर ने उनसे सोना अथवा चाँदी नहीं माँगा था। उसने एक जगह माँगी जो उसके तेज से परिपूर्ण हो जाय। उन्हें सिखाया गया था कि किस प्रकार वे स्वयं ही परमेश्वर की महिमा से भर जा सकते थे। पर वे तो इसे एकदम भूल गए थे। उनकी आँखे अपने आप पर और उस मन्दिर तथा उसकी भव्यता पर लगी हुई थी। हाथ के बने हुए मन्दिर पर वे बड़ा गर्व करते थे। परन्तु महिमामय परमेश्वर इसलिए प्रकट हुआ कि लोग उसकी महिमा को देख सकें और वह महिमा उनके अन्तर में निवास करे। परमेश्वर हाथ के बनाए हुए भवनों में नहीं रहता। वह तो जीवत मन्दिर में निवास करना चाहता है। (२ कुरि॰ ६:१६), 'और तुम ही उस जीवित परमेश्वर के मन्दिर हो।' परमेश्वर कह रहा है - 'मैं उनमें निवास करुँगा और उनमें चलूँ – फिरुँगा।' परमेश्वर एक ऐसा मन्दिर चाहता है कि उसकी प्रजा स्वर्गीय विधान को सीखें जिससे वह उनमें निवास कर सके। इसका अर्थ यह नहीं कि वे परमेश्वर की महिमा मात्र क्षण-भर के लिए देखेंगे, बल्कि अनन्तकाल तक के लिए वह महिमा उनमें विराजमान रहेगी।

परमेश्वर ने किस उद्देश्य से आपको चुना है? वह आपका धन, आपका सोना अथवा चाँदी नहीं चाहता, बल्कि वह स्वयं आप ही को चाहता है। वह इसलिए आपको चाहता है कि उसकी महिमा आप में भर जाय, उसकी उपस्थिति आप के साथ रहे, आप नये रुप से जीवन बिताएँ, नये रुप से चलें। परमेश्वर आपके शरीर को अपना मन्दिर बनाना चाहताहै ताकि उसकी महिमा आप में प्रवेश कर सके। बस, इसीलिए उसने आपको चुना है।

क्या आप स्वर्गीय महिमा से परिपूर्ण होने को उत्सुक, इच्छुक और तत्पर है? तभी आपका चेहरा चमकेगा। आप वाही भी, किसी भी स्थान में हों; मित्रों के बीच में हों अथवा शत्रुओं के मध्य हों; अकेले अथवा किसी बुरी परिस्थिति में पड़े हों, आपका चेहरा चमकेगा। आप किसी भी परिवार, पड़ोस अथवा अवस्था में हों, स्वस्थ हों अथवा बीमार हों, तौभी आपका चेहरा चमकेगा। क्यों? क्योंकि जब अपने महिमामय परमेश्वर को अपने हृदय में उसके मन्दिर के रुप में प्रवेश करने की अनुमति दे दी है तो आप अपने हृदय में परमेश्वर की महिमा के निवास करने की सत्यता को अनुभव कर सकेंगे।

परमेश्वर हमें सहायता करे कि हम उसकी महिमा को देखें और उस महिमा को प्रतिच्छाया हमारे चेहरों पर दिखाई पड़े।

अध्याय:५

उसकी महिमा के लिए चुना जाना

हम लोग देखते हैं कि भजन संहिताकार निम्न लिखित तीन बातों के लिए एकदम लालायित था:- परमेश्वर के चुने हुओं का कल्याण देखना, उसकी प्रजा की प्रसन्नता में आनन्द मनाना तथा उसका उत्तराधिकार पाकर महिमान्वित होना। अब तक हमने केवल पहली बात पर विचार किया है - 'कि मैं तेरे चुने हुओं का कल्याण देख सकूँ।' सब से पहली आवश्यकता बात है परमेश्वर का चुना हुआ पात्र बनना और प्रभु के आधीन अपने को अर्पित कर देना। इसके लिए यह आवश्यक है कि हम इसके लिए इच्छुक हों। यह कदम उठाने के बाद यह स्पष्ट कर दिया जायगा कि प्रभु हमें किस प्रकार अन्य दो अनुभवों के सम्पर्क में लायगा जो परस्पर एक दूसरे के साथ गुँथा हुआ है। इसे स्पष्ट करने के लिए प्रभु ने हमारे सामने स्टीफेन के जीवन को लाया है।

अब हम दूसरी बात पर विचार करते है: 'कि हम तेरी प्रजा की प्रसन्नता में आनन्दित हो सकें।' प्रेरित॰७:१, २ पर पुन: विचार करें 'तब महायाजक ने कहा – क्या ये बातें ऐसी ही हैं? स्टीफेन ने उत्तर दिया – हे लोगो, भाइयो और गुरुजनो, आप लोग सुनें - 'तेजोमय परमेश्वर ने हमारे पूर्वज इब्राहीम को उसके सीरिया (हारान) जाने से पहले इराक (मेसोपोटामिया) में दर्शन दिया।' हम यह देख चुके हैं कि शत्रुओं ने परमेश्वर के चुने हुए पात्र को किस सताया और जब वे उसपर झूठ दोषारोपण करने लगे तो उसका चेहरा स्वर्गदूत की भाँति चमकने लगा। उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ कि ऐसा कैसा हुआ। परमेश्वर का पात्र होने के कारण वह इन शब्दों के द्वारा जो बड़े अर्थपूर्ण थे यह दिखाने लगा कि प्रारम्भकाल से ही महिमामय परमेश्वर ने अपने लोगों को महिमान्वित करने की योजना बना ली थी। १ से लेकर ५० तक के पदों में उसने उस प्रजा का पूरा इतिहास वर्णन करके यह प्रदर्शित किया कि उस प्रजा को चुनने में परमेश्वर का एक उद्देश्य था।

हम इस कहानी को सात श्रेणियों में विभक्त कर सकते हैं। पहली तीन श्रेणियों का प्रतिनिधित्व क्रमशः इब्राहीम, इसहाक और याकूब करते हैं। इनके बाद हम मिश्र देश, मरुभूमि, कनान देश और राजा सुलेमान के द्वारा बनाए हुए स्वर्गीय मन्दिर की ओर अग्रसर होते हैं। स्टीफेन ने अपनी कहानी इब्राहीम से आरम्भ की और सुलेमान आकर समाप्त की। वह आगे नहीं बढ़ सका, कारण यह था कि उस पर दोषारोपण करनेवाले लोग उससे बड़े क्रुद्ध थे। तथापि जो कुछ आवश्यक था उसे तो वह कह ही चुका था। स्टीफेन ने इस रहस्य को स्पष्ट कर दिया था कि परमेश्वर अपनी प्रजा को इसलिए प्रस्तुत कर रहा था कि वह उससे एक महान स्वर्गीय आनन्द प्राप्त करे। (२ इति॰ ७: १-३)। वह परमेश्वर की प्रजा के लिए सब से अधिक आनन्द का दिन था जो उस जाति के सम्पूर्ण इतिहास में सर्वोच्च घटना थी। परमेश्वर के द्वारा दी हुई स्वर्गीय योजना के अनुसार जब मन्दिर-निर्माण का कार्य समाप्त हुआ तो ऊपर से आग गिरी और उसने बलि को भस्म कर डाला। तत्पश्चात् सम्पूर्ण मन्दिर में परमेश्वर का तेज भर गया। इस्त्राएल की सारी सन्तान ने भूमि पर गिरकर साष्टांग दण्डवत करके प्रभु की स्तुति और आराधना की। उन्होंने ऐसी बात पहले कभी नहीं देखी थी, इसकारण उनका हृदय स्वर्गीय आनन्द से परिपूर्ण हो गया। वास्तव में वह दिन उनके इतिहास में सबसे अधिक आनन्द का दिन था। क्योंकि उसी दिन सर्वशक्तिमान, जीवित, पवित्र और प्रेमी परमेश्वर अपनी पूर्ण महिमा के साथ उनके बीच में अवतरित हुआ था। इस कारण प्रत्येक व्यक्ति का हृदय पूर्ण शान्ति से भरपूर था। उनके सभी शत्रुओं का विनाश हो चुका था। सारा राज्य शान्ति और धार्मिकता से परिपूर्ण हो गया था और मन्दिर परमेश्वर की उपस्थिति से ओतप्रोत हो गया था। ऐसा था वह हर्ष और आनन्द जिसका वर्णन भजन संहिताकार भजन, १०६ में कर रहा था जबकि उसने यह प्रार्थना की - 'कि मैं तेरी प्रजा की प्रसन्नता में आनन्द मनाऊँ।' यह सांसारिक आनन्द नहीं था, बल्कि एक स्वर्गीय आनन्द था, एक ऐसा आनन्द जो इस जगत में प्रत्येक व्यक्ति के साथ बाँटा नहीं जा

सकता। गीतकार उस आनन्द के लिए लालायित था जो उस समय मिलता है जब जीवित परमेश्वर अपनी प्रजा के बीच रहकर काम करता है।

वे इस हालत में किस प्रकार पहुँचे थे? पहली बात, परमेश्वर ने इब्राहीम को, और फिर उसके द्वारा इसहाक और याकूब को चुना। याकूब के जीवनकाल में वे लोग मिश्र देश गए, जहाँ से वे मरुस्थल में गए और वहाँ चालीस सालों तक भटकते रहने के बाद वे प्रतिज्ञा की भूमि कनान देश में आए। इस देश में भी उन्हें बहुत दिनों तक प्रतीक्षा करनी पड़ी, तथा अनेकानेक कष्टों को सहन करना पड़ा। तब अन्त में उन्होंने परमेश्वर की योजना की सिद्धि उस समय देखी जब उसका भवन उसकी महिमा से परिपूर्ण हो गया।

परमेश्वर जिस उपाय से अपने लोगों को अपने काम के लिए चुनता है उसमें गम्भीर अर्थ छिपा रहता है। क्या इस बात में कोई रहस्य नहीं है कि इब्राहीम की पत्नी बन्ध्या ही थी? नि:सन्देह, परमेश्वर हमें दिखा रहा है कि किस प्रकार हम लोग अपने आपमें बन्ध्या हैं। जब पाप इस जगत में आया तो उसने सारे संसार को बन्ध्यापन की दशा में पहुँचा दिया। यह बन्ध्यापन मानवीय प्रयत्न से दूर नहीं किया जा सकता। इस्त्राएल अनेक वर्षों तक बन्ध्या बना रहा ताकि लोग इस बात को जान सकें कि पाप के कारण हमलोग बन्ध्या रह जाते हैं। मनुष्य बहुत धन कमा सकता है, ऊँची पदवी पा सकता है, परन्तु यदि उसके जीवन में परमेश्वर के लिए कुछ भी नहीं है तो वह उसके सामने बन्ध्या और निष्फल ही बना रहेगा। परमेश्वर ऐसी वस्तुओं को चाहता है जो अनन्तकाल तक रहे। अतएव परमेश्वर हमें जो सबसे पहला पाठ पढ़ाना चाहता है वह यह है कि हम लोग स्वभाव से ही बन्ध्या और निष्फल हैं।

परमेश्वर ने आश्चर्यजनक रुप से इब्राहीम को उसकी वृद्धावस्था में एक पुत्र दिया। इब्राहीम और उसकी पत्नी बहुत बूढ़े हो गए थे और सन्तान पाने की उनकी सारी आशाओं पर पानी फिर गया था। वे सब सूखे वृक्ष के समान हो गए थे। परन्तु परमेश्वर ने प्रतिज्ञा

की थी और उसने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की, उनके शरीरों में नई जान डाल दी। बस इसी प्रकार इसहाक का जन्म हुआ। उसका जन्म पुनरुत्थान के सामर्थ्य की ओर संकेत करता है जो एक ऐसी शक्ति है जिससे मृत्यु पर विजय पाया जा सकता है। क्या आप स्वर्गीय आनन्द, फलपूर्णता का आनन्द प्राप्त करना चाहते है? तो सबसे पहली बात यह है कि आप पुनरुत्थान के सामर्थ्य को जाने और यह भी जाने कि मृत्यु और अपने जीवन के बन्ध्यापन पर विजय प्राप्त करने के लिए यह सामर्थ्य आप के लिए भी उपलब्ध है। यही कारण है कि हमारे प्रभु की मृत्यु हुई और वह फिर जी उठा। जब वह क्रूस पर टंगा था तो किसी ने यह कहना शुरु किया "यदि तू मसीह है, तो नीचे आ जा और तब हम तुझ में विश्वास करेंगे।" परन्तु वह कभी नीचे नहीं उतरा। वह मरा और गाड़ा गया और फिर जी उठा। क्यों? ताकि वह हमारे लिए पुनरुत्थान का सामर्थ्य उपलब्ध करे।

इसहाक एक दूसरी ही जाति का है। उत्पत्ति॰ २६:१२ - 'प्रभु ने उसे आशीष दिया' और 'वह अत्यन्त महान हो गया' (पद: १६)। अबीमेलेक ने इसहाक से कहा - 'हमारे पास से चला जा, क्योंकि तू हम लोगों से अधिक सामर्थी हो गया है।' परमेश्वर का चुना हुआ पात्र होने के कारण वह जहाँ कहीं भी गया फलता-फूलता गया और थोड़े ही दिनों मे वह अत्यन्त धनी व्यक्ति हो गया। तब उस देश के सब लोग उससे डाह करने लगे। उन्होंने कहा - 'हमारे पास से चला जा!' गरार देश के चरवाहों ने उसे झगड़ा करने को उत्तेजित किया (पद:२०), क्योंकि वे उससे घृणा करते और शत्रुता रखते थे। परन्तु परमेश्वर ने उसे किसी नये स्थान में चले जाने को कहा। इसहाक वहाँ भी अत्यन्त महान और बड़ा धनी हो गया और लोग फिर उससे डाह करने लगे और उसे झगड़ा, घृणा और कटुता के लिए उस्काने लगे। परन्तु वह परमेश्वर के पथ-प्रदर्शन में तब तक आगे बढ़ता रहा जब तक कि वह 'बीरशेबा' नामक स्थान में पहूँचा, जो प्रतिज्ञा का स्थान कहलाता है,

तो परमेश्वर ने उससे कहा - 'मत डर, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ, और तुझे आशीष दूँगा।' (पद:२४)।

जब परमेश्वर किसी व्यक्ति को आशीष देता है तो उस व्यक्ति का अवश्य ही विरोध होता है और उससे घृणा की जाती है। लोग उसे जबरदस्ती घसीटकर घृणा, झगड़ा और शत्रुता के पथ पर ले जाएँगे ताकि उसका आनन्द नष्ट हो जाय, उसका विश्वास दुर्बल पड़ जाय, और उसकी शान्ति में बाधा पड़ जाय। शैतान अनेकों प्रकार से इस बात की चेष्टा करेगा कि परमेश्वर की प्रजा झगड़ा और घृणा में पड़े तथा उनका आनन्द, शान्ति और विश्वास नष्ट हो जाय। क्या आपके साथ भी ऐसा हो रहा है? तो आप भी उस दिशा में आगे बढ़ते जायें जिधर परमेश्वर आपको ले जा रहा है, और घृणा, झगड़ा और ईर्ष्या में फँसना इन्कार कर दें। परमेश्वर आपको अवश्य ही अन्त में 'बीरशेबा' ला पहुँचाएगा। आपको जितना पहले था परमेश्वर उससे कहीं अधिक आपको देगा। हमारे प्रभु ने यूहन्ना। १६:२०, २२ में कहा – "तुम्हारा शोक आनन्द में परिणत हो जायगा, और तुम्हारा आनन्द और शान्ति को आपसे छीन न लेगा।' यदि पलिश्ती आपके आनन्द और शान्ति को आपसे छीन लेना चाहें तथा आपको उत्तेजित करना चाहें, आपको परेशान करना चाहें, आप को क्रोध दिलाना चाहे अथवा आपको झगड़े में घसीटना चाहें तो आप सावधान हो जायें इसहाक की तरह बने। अपनी पत्नी अथवा पति के साथ, भाई अथवा बहन के साथ, मित्र अथवा पड़ोसी के साथ अथवा उपदेशक के साथ झगड़े, घृणा और ईर्ष्या-द्वेष में घसीट जाना इन्कार करें। झगड़े, घृणा और शत्रुता की सीमा से बहुत दूर चले जायें ताकि आप 'बीरशेबा' जा पहुँचें, तो परमेश्वर आपको निश्चय ही पहले से अधिक प्रदान करेगा। यही इसहाक का सन्देश है।

याकूब के जन्म के पहले से ही परमेश्वर की यह योजना थी कि वह राजकुमार बने। परन्तु याकूब को उसकी माता ने ही धोखा दिया। वह उसे अत्याधिक प्यार करती थी।

जो कुछ वह कहती थी याकूब तुरन्त कर डालता था उसने परमेश्वर की प्रतिज्ञा को गलत ढंग से अनुभव करने की कोशिश की। कई सालों के संग्राममय जीवन के बाद ही वह परमेश्वर और मनुष्यों के साथ राजकुमार बन सका था।

भारत में बहुत से मसीही ऐसे हैं जो भिखारी हैं। अमेरिका और यूरोप में भी बहुत से भिखमंगे हैं। भीख माँगनेवाले कलीसिया के रक्षक, और भीख माँगनेवाले उपदेशक! ये कलीसिया के नये भवन के लिए, सुसमाचार कार्य के लिए, अथवा किसी प्रचार धावे के लिए धन माँगते हैं और अपने मन में समझ लेते हैं कि उनकी माँग युक्तिसंगत है। वे कड़े शब्दों में अपील करते हैं - 'उदारतापूर्वक दान दीजिए! दिल खोलकर दीजिए!' वे चिल्लाकर कहते हैं - 'हम अफ्रिका में, भारत में अथवा ऑस्ट्रेलिया इत्यादि देशों में सुसमाचार कार्य के लिए धन चाहते हैं। लोग भूख से मर रहे हैं। कौन चीन (अथवा कोई अन्य स्थान) जायेगा?' तब कुछ लोग आगे बढ़ते और कहते हैं - 'मैं भारत जाना चाहता हूँ। भारत जाने के लिए मैं एकदम व्यग्र हूँ', (सम्भव है चीन अथवा अन्य किसी देश के लिए भी)। इसी प्रकार दूसरा तरीका है विज्ञाप्ति करने का - 'मैं भारत जाना चाहता हूँ। क्या आप मेरी सहायता करेंगे?' और यह उमीदवार जगह-जगह भिक्षा माँगता चलता है - 'कौन मुझे पाँच डॉलर अथवा एक डॉलर भी देने का वचन देगा?' क्या ऐसे व्यक्ति वास्तव में कह सकते हैं कि उन्हें परमेश्वर ने भेजा है? हे भिखमंगों, अरे भिखमंगों, परमेश्वर तो तुम्हें राजकुमार बनाना चाहता है। परन्तु सांसारिक राजकुमार नहीं, परमेश्वर का राजकुमार। परमेश्वर आपको अपनी सर्वोत्तम वस्तु देना चाहता है। सभी बातों के लिए परमेश्वर ही के पास जाना सीखें, मनुष्य के पास नहीं। इसके विपरीत, लोग याकूब की तरह योजना पर योजना बनाए चले जाते हैं। वे अपना जन्म-अधिकार चाहते हैं; पर एसाव से जन्म-अधिकार माँगने की आवश्यकता बिल्कुल नहीं है। परमेश्वर किसी के माँगने और सोचने से कहीं अधिक दे सकता है। पर दुख की बात तो यह है कि हममें से बहुत से लोग

'याकूब' मसीही हैं; पेट के लिए मसीही, लोभी मसीही हैं जब कि परमेश्वर कर रहा है - 'देखो इस्त्राएल, तुम राजकुमार हो, तुम पुरोहित हो, तुम मेरे मित्र हो, मेरे सहकर्मी हो। मेरे पास आओ, मैं तुम्हें उत्तर दूँगा।' याकूब के जीवन से परमेश्वर हमें यह शिक्षा देना चाहता है कि हम परमेश्वर के साथ राजकुमार और उसके सहभागी कैसे बनें।

इसके बाद हम मिश्र देश के सम्बन्ध में विचार करें। इस्त्राएलकी सन्तान वहाँ चार सौ सालों तक बसी रहीं। उनकी संख्या वहाँ बढ़ती गई और फिरौन का व्यवहार उनके प्रति कटुतर होता गया। तब उन्होंने छुटकारे के लिए परमेश्वर को पुकारा। परमेश्वर ने उन्हें उतने दिनों तक बन्धन में पड़ा रहने दिया। परन्तु उनकी प्रार्थना के उत्तर में परमेश्वर ने मूसा के रुप में उन्हें एक उद्धारकर्त्ता दिया। परमेश्वर ने उन्हें फिरौन के अधीन तब तक दासता में रहने दिया जब तक कि उन्होंने यह न जान लिया कि उनका शत्रु कितना क्रूर, कठोर और दुष्ट है। पहले-पहल जब वे मिश्र देश में आए तो वे बड़े सुखी थे। उन्हें सब वस्तुओं की भरपुरी थी। परन्तु वे अपने देश से बहुत दूर थे। वे शत्रुओं की सीमा के भीतर थे।

आज भी बहुत से लोग ऐसे हैं जिनका कहता है कि मृत्यु अथवा नरक नाम की कोई वस्तु नहीं। ऐसे आधुनिक प्रचारक शैतान की सेवा करते हैं। वे उसकी सेवा में, परमेश्वर के भक्तों की हँसी उड़ाकर तथा उन्हें पुराने विचार का बातकार बड़ा आनन्द पाते हैं। वे कहते हैं कि परमेश्वर ने उनके सुख के लिए संसार को बनाया, और अपनी मूर्खता के कारण वे संसार का अनुसरण करते, शैतान की सेवा करते और शारीरिक अभिलाषाओं की पूर्ति के लिए कठोर परिश्रम कर रहे हैं। बहुत से ऐसे सांसारिक मसीही हैं जो पाप और अन्धकार में निमग्न हैं। वे कहते हैं कि हमारा नया जन्म हो चुका है, पर वे अनेकों सांसारिक साधनों की दासता में जकड़े है। उन्हें मालूम नहीं कि शैतान कितना दुष्ट है जिसकी गुलामी की जंजीरों से वे जकड़े हैं। फिरौन के हृदय की कठोरता का ज्ञान प्राप्त करने के पूर्व इस्त्राएल की सन्तान चार सौ वर्षों तक गुलाम थे। उन्हें प्रात:काल से लेकर

रात पड़ने तक काम करना पड़ता था। वे भारी-भारी पत्थरों को उठाकर लाते, प्रतिदिन भारी बोझ ढोते और उन्हें इसके लिए उचित मजदूरी भी नहीं मिलती थी। तब अन्त में दुख से व्याकुल होकर उन्होंने प्रार्थना की – "हे परमेश्वर, हमें छुटकारा दिला, हमारे दुखों और आँसुओं की ओर दुष्टिपात कर।' तब परमेश्वर ने उनका क्रन्दन सुना और उनके लिए एक उद्धारकर्ता भेज दिया। परन्तु उनके छुटकारा पाने से पहले ही परमेश्वर ने मिश्रियों के ऊपर दास विपत्तियाँ भेजी। क्यों? इसलिए कि लोग शत्रु की धोखेबाजियों को महसूस कर सकें। परमेश्वर के प्रत्येक दास को यह जान लेना अनिवार्य है कि शत्रु कितना दुष्ट और धूर्त है जो परमेश्वर की सन्तान को अन्धकार में घसीट ले जाना चाहता है। जब परमेश्वर का दास शैतान के राज्य और अन्धकार के सामर्थ्य की भूल जाता है तो वह अवश्य ही दासता के बन्धन में फँसेगा।

जब इस्त्राएल की सन्तान मरुस्थल में आई तो उन्हें वहाँ चालीस वर्षों तक भटकना पड़ा, जहाँ उनके लिए न तो कोई काम था, न जोतने के लिए खेत थे और न रहने के लिए महान थे। भोजन के विषय में प्रभु ने कहा - 'मैं प्रतिदिन मन्ना भेजा करुँगा।' परन्तु उन्हें एक काम करना था। वह यह, कि उन्हें उस स्थान में जहाँ उनके तम्बू तने थे तब तक रहना था जब तक कि परमेश्वर का बादल निवास-स्थान पर से आगे न बढ़ जाय (गिनती॰ ९:१८-२२)। कभी तो वह बादल एक या दोन दिनों तक ही ठहरता, पर कभी-कभी महीनों ठहरा रहता। कभी तो यह भोर में उठ जाता, कभी दिन में, और कभी अर्द्धरात्रि में। जैसे ही वह बादल चलने लगता वैसे ही लोगों को भी प्रस्थान करना पड़ता, समय चाहे रात का हो अथवा दिन का, और दिशा चाहे जो भी पकड़ ले जब तक वे मरुस्थल में थे वे अपनी इच्छा के अनुसार जहाँ-तहाँ नहीं जा सकते थे। वे परमेश्वर के द्वारा परिचालित, शासित और वशीभूत होकर रहना पड़ता था। यह एक साधारण पाठ था, पर उनके लिए इसे सीखना बड़ा ही कठिन था। परमेश्वर चाहता है कि आप और मैं वही पाठ सीखें,

अर्थात् आत्मा के द्वारा संचालित होना सीख लें)रोमी॰ ८:१४)। परमेश्वर के लोगों को पवित्र आत्मा का दान दिया गया है। वह उद्धारकर्त्ता है और पथ-प्रदर्शक भी। परमेश्वर के सन्तान को केवल उसी के द्वारा संचालित और शासित होना चाहिए। यह तभी सम्भव है जब हम अपनी अभिलाषाओं के प्रति मृतक बन जाते हैं। पर इस पाठ को सीखने में कई वर्ष लग जाते हैं।

बहुत से लोग ऐसे हैं जो अपनी पत्नी, पति, सन्तान, पड़ोसी, मित्र अथवा किसी पुरुष या स्त्री के द्वारा शासित होते हैं, परमेश्वर के द्वारा नहीं। कितने ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने परमेश्वर की आवाज किसी सभा में सुनी है; परन्तु जब वे घर जाते हैं और पत्नियों से सलाह लेते हैं तो वे उन्हें कहती हैं - 'मुर्ख मत बनो। तुम्हें पत्नी और तीन बच्चों का ख्याल रखना होगा। यह मार्ग तुम्हारे लिए नहीं है।' कुछ अन्य व्यक्ति ऐसे लोगों के द्वारा शासित होते हैं जो उनसे पाप करा डालते हें। वे लज्जित जीवन बिताते हुए लोभ, लालच और पाखंड के द्वारा शासित होते हैं। वे पूछते हैं - 'हमारे मित्र और पड़ोसी हमें क्या कहेंगे? क्या इसमें कोई आश्चर्य है कि ऐसे व्यक्तियों को यह सरल पाठ सीखने के लिए, कि वे बिल्कुल पूर्ण रुप से परमेश्वर के अधीन कैसे हो जायें, चालीस सालों तक मरुस्थल में भटकना पड़ा?

परमेश्वर के लोग मरुभूमि से कनान देश में आए जो प्रतिज्ञा किया हुआ देश था और जहाँ दूध और मधु की धाराएँ बहती थीं। यह अपने आप में परमेश्वर की उस योजना का प्रतीक था जिसे उसने अपने लोगों के लिए बनाई थी। यूहन्ना॰ ६:५५ में हमें बताया गया है कि परमेश्वर ने उन्हें एक ऐसा देश दिया जो हर प्रकार से अद्भुत था। यह एक उपजाऊ देश था जिसके प्रत्येक भाग में सब प्रकार की भरपूरी थी। उन्हें सब वस्तुएँ प्रचुर परिणाम में मिली थीं जिसके सम्बन्ध में परमेश्वर कह रहा था - 'हे मेरी प्रजा के लोगों, मैंने तुम्हारे लिए भरपुर साधन जुटा लिए हैं। परमेश्वर ही तुम्हारे लिए भरपूर साधन जुटा लिए

हैं। परमेश्वर ही तुम्हारी परिपूर्णता हे, बशर्त्ते कि तुम यह जाने कि उसे खाकर और उससे परितृप्त होकर उस देश का उपभोग कैसे किया जाता है।'

परमेश्वर ने उन्हें आदेश दिया था कि वे उनके साथ कभी भी किसी करार में न फँसें, उस देश के निवासियों से कोई सन्धि न करें तथा उनके साथ विवाह सम्बन्ध स्थापित न करें। परन्तु उन्होंने परमेश्वर की अज्ञा का उल्लंघन किया। जब गिबौन के लोग यहोशू के पास आए तो उन्होंने पुराने जूते और पुराने कपड़े पहन लिए थे और फफँदी लगी हुई रोटी ला कर कहने लगे - 'हम लोग दूर देश से आ रहे हैं। हमने आप लोगों के सम्बन्ध में सब कुछ सुन रखा है। कृपया हमारे साथ प्रतिज्ञा में बँधकर सन्धि करें।' परमेश्वर की इच्छा को जाने बिना ही यहोशू ने सन्धि कर ली, पर वे ही लोग उनके लिए जाल बन गए। धीरे धीरे मिले-जुले विवाह आरम्भ हुए, मूर्ति-पूजा प्रविष्ट हुई और अन्य निषिद्ध वस्तुएँ उनके दैनिक जीवन के अंग बन गई। फलस्वरुप लोग आत्मिक रुप से अन्धे हो गए।

यदि कोई परमेश्वर की सन्तान स्वर्गीय कनान देश का आनन्द प्राप्त करना चाहे तो उसे संसार और सांसारिक विधि-विधानों औंर सुखों से एकदम अलग हो जान पड़ेगा। आज हर जगह परमेश्वर के लोगों में बन्ध्यापन क्यों पाया जाता है? उन्हें अच्छी शिक्षा दी जाती है तथापि वे अन्धे और बन्ध्या हैं। एक कारण तो यह है कि बहुत से लोग सांसारिक व्यक्तियों के साथ करार और प्रतिज्ञा के बन्धन में बँधते है। कुछ लोग तो पोशाकों और फैशनों में और अन्य लोग विवाह और रोजगार के द्वारा सांसारिक लोगों के साथ बँधते हैं। ऐसे लोग उस सम्पत्ति के विषय में, जो प्रभु यीशु मसीह में उनके लिए सुरक्षित है, कैसे जान सकते हैं? वह हमारा स्वर्गीय भोजन और जल है जो हमें प्रचुर मात्रा में सन्तुष्टि प्रदान करता है। पर आपको उसके प्रति विश्वासयोग्य होना पड़ेगा। शायद इसका यह भी अर्थ हो सकता है कि कुछ लोगों को सच्चे आत्मिक पति अथवा पत्नी पाने में कठिनाई होने के

कारण वर्षों तक अविवाहित जीवन व्यतीत करना पड़े। परन्तु आत्मिक रुप से बन्ध्या रहकर वासनिक जीवन व्यतीत करने से तो यह कहीं अच्छा है कि हम अविवाहित ही रहें।

आपका यह परम कर्त्तव्य है कि आप प्रत्येक बात में परमेश्वर के वचन को लाएँ, चाहे यह आपका पारिवारिक जीवन हो, अथवा आत्मिक जीवन हो, अथवा कलीसियायी जीवन हो। तभी आप भरपूरी के जीवन और पूर्ण शान्ति का आनन्द प्राप्त कर सकते हैं। 'मैं इसलिए आया कि वे जीवन पाएँ और बहुतायत से पाएँ' (यूहन्ना॰ १०:१०)। तभी तो अकथ्य और महिमा से परिपूर्ण आनन्द, सभी सामर्थ्य और सारा राज्य प्राप्त हो सकता है। मसीह मेरा कनान देश है, वह मेरी सन्तुष्टि है और वह मुझे सभी वस्तुएँ प्रचुरता से प्रदान करता है। बहुत से मसीही ऐसे हैं जो साल में दस महीने तक सूखी रहनेवाली नदी के समान है। नदी तो चौड़ी है, पर वह लगभग दस-ग्यारह महीने तक बिना पानी की रहती है। वर्षाकाल का आगमन होने पर उसमें एक महीने तक पानी रहता है। एक हल्की सी बाढ़ भी उसमें आती है। पर उसमें कुछ जान नहीं रहती। मसीह सर्वदा के लिए सब जगह अपनी अनन्तकालीन शान्ति, आनन्द और सामर्थ्य की परिपूर्णता देने को इच्छूक है। यही कनान का अर्थ है।

इसके बाद मन्दिर निर्माण का काम शुरु हुआ। परमेश्वर ने दाऊद को चुना और अनेक सालों तक कष्ट उठाने के बाद उसे स्वर्गीय योजना दी गई (१ इति॰ २५:१६)। परमेश्वर ने दाऊद को मन्दिर बनाने के लिए स्थान भी दिखा दिया। दाऊद ने वह योजना और उसकी सारी सामग्री सुलेमान को दी जिसने मन्दिर का निर्माण कराया। सुलेमान शान्तिप्रिय व्यक्ति था और वह काम कवल शान्तिकाल ही में किया न गया बल्कि मन्दिर का सारा काम पूर्ण शान्ति की अवस्था में पूरा किया गया। परमेश्वर की दी हुई योजना का छोटा से छोटा अंश भी जब तक पूरा न हो गया तब तक किसी ने कुल्हाड़ी अथवा हथौड़े की आवाज तक नहीं सुनी। तब राजा और प्रजा, दोनों ने बलिदान चढ़ाए और आहुतियाँ दी

और तब अचानक स्वर्ग से अग्नि गिरी और सारा मन्दिर परमेश्वर की महिमा से परिपूर्ण हो गया। वह कितना अद्‌भुत दृश्य रहा होगा। परमेश्वर का सामर्थ्य देखकर सारी प्रजा ने आनन्द मनाया। सर्वसामर्थी परमेश्वर, जीवित परमेश्वर उनके बीच निवास करने को उतर आया था। अपने बीच ऐसे सामर्थी परमेश्वर को पाने का अधिकार पाकर सारी प्रजा आनन्द में मग्न हो गई। गीतकार के शब्दों में यही उसकी प्रजा का आनन्द था जिसमें विश्वास के द्वारा वह भी हर्षित हुआ, और उसी में हम भी विश्वास और अनुभव दोनों के द्वारा हर्षित होते हैं।

परमेश्वर ने आपको और मुझको आत्मिक मनुष्य बनने के लिए चुना है उन लोगों ने परमेश्वर की महिमा तो देखी, पर अपने अभिमान के कारण वे अन्धे बन गए और अन्धकार में डूबे रहे। जिसे वे लोग नहीं देख सके, अब वही मंडली में, जो परमेश्वर का सच्चा मन्दिर है, आज प्रकट किया जा रहा है। सुलेमान का बना हुआ मन्दिर नष्ट कर दिया गया। वह एक अद्भुत मन्दिर था। तौभी उसे नष्ट हो जाना पड़ा। वह अनन्तकालीन नहीं था। परन्तु अब परमेश्वर आपको और मुझको लेकर अपने मन्दिर का निर्माण कर रहा है। यह मन्दिर ऐसा होगा जिसे कोई हिला तक नहीं सकेगा। यह मन्दिर पत्थर, सोना, चांदी, पीतल तथा लकड़ी से बनवपाया नहीं जा रहा हैं, बल्कि इसका निर्माण जीवित पत्थरों से किया जा रहा है जिसका आधारशिला प्रभु यीशु मसीह स्वयं है। वह हमारा स्वर्गीय सुलेमान है। वह निर्माता भी है और आधार भी। वह इस समय आपको और मुझको मन्दिर के रुप में बना रहा है ताकि अनन्तकाल के लिए परमेश्वर की महिमा हो और यही हमारे आनन्द का कारण है जिसके लिए हम खुशियाँ मना रहे है। यही वह उत्तराधिकार है जो हमें उसकी ओर से मिला है। प्रभु का उत्तराधिकार उसकी प्रजा ही है (व्यवस्था॰ ३१:१; भजन स॰८७:७१)।

जब मैं कालेज में पढ़ रहा था तब 'प्रिंस ऑफ वेल्स' भारत आए। उन दिनों काँग्रेस ने असहयोग आन्दोलन छेड़ दिया था। लाहौर की किसी भी पार्टी में जान हम सबने इन्कार कर दिया। परन्तु हमारे दल का एक छात्र पार्टी में भाग लेने को गया। जब वह वापस आया तो हम लोग उससे हाथ मिलाने गए परन्तु उसने हमसे हाथ मिलाना अस्वीकार कर दिया। हमने जब पूछा कि कारण क्या है, तो उसने हमें उत्तर दिया - 'मैं प्रिंस ऑफ वेल्स' से हाथ मिलाया है।' महिमामय राजा के साथ अनन्तकाल तक जीवन बिताना और उसकी महिमा और पूर्णता से भरपूर हो जाना कितना अद्भुत होगा! इसकी आशा मुझे स्वर्गीय आनन्द देती है, और इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसने हम सबाके चुना भी है; किसी सांसारिक दल अथवा समाज का सदस्य बनाने के लिए नहीं, बल्कि स्वर्गीय मन्दिर का सदस्य बनाने के लिए। यही मेरे हर्ष का कारण है, यही मेरा आनन्द है, यही मेरी आशा है, कि मैं भी उस स्वर्गीय मन्दिर का सदस्य बन सकूँगा, परमेश्वर की प्रजा के आनन्द में हर्षित होऊँगा तथा परमेश्वर के उत्तराधिकार में महिमामय बनूँगा।

अब उन सोपानों पर ध्यान दीजिए जिनसे होकर परमेश्वर अपनी प्रजा को ले गया। व्यक्ति के रुप में वह पहले इब्राहीम को, फिर इसहाक को और तब याकूब को ले चला। तत्पश्चात् वह अपनी प्रजाको मिश्र देश में ले गया। उसके बाद वह उन्हे मरुस्थल में ले आया। फिर वह उन्हें कनान देश मे लाया। तब अन्त में उसने उनसे मन्दिर का निर्माण करवाया और तब परमेश्वर की महिमा अपनी प्रजा के बीच अपनी स्वर्गीय गरिमा और सामर्थ्य के साथ निवास करने लगी।

है मनुष्यों, आनन्द मनाओ, क्योंकि तुम्हारा उद्धारकर्ता तुमसे प्रेम करता है। वह आपको अपनी स्वर्गीय प्रजा बनाना चाहता है। वह आपको संसार के सभी राष्ट्रों से महान बनाना चाहता है। आप उसके नेतृत्व में चलिए। तब आप स्वयं जान जायेंगे कि प्रभु का आनन्द आपको क्या दे सकता है। जब आप स्वर्गीय संगीत गाएँगे तो आपका हृदय

अवर्णनीय आनन्द से भरपूर हो उठेगा। यद्यपि मैं स्वयं गीत गा नहीं सकता, तथापि मैं संगी और स्वर्गीय भजनों का आनन्द भोग कर सकता हूँ। अपने परिवर्तन के पश्चात् जब मैंने पहले-पहल आत्मिक गात सुना तो मुझे ऐसा लगा मानों मैं स्वर्ग में हूँ। वह संगीत इतना स्वर्गीय और मधुर था। परन्तु स्वर्ग का संगीत तो इससे भी कहीं अधिक गौरवपूर्ण है।

आइए, पमरेश्वर के निकट आइए। उसे आप अपने को चुनने दीजिए। आप चाहे जो भी हों और आपका जीवन चाहे जितना ही अधिक लज्जापूर्ण क्यों न हो। आपका पाप चाहे जितना भी महान हो, आप नम्र बनकर उन्हें मान लें ताकि आप परमेश्वर के हाथों में पड़कर उसका चुना हुआ पात्र बन सकें। आप अपने हृदय से कहिए - 'हे प्रभु, मैं तेरे निकट आने योग्य नहीं हूँ तथा तेरा प्रेममय आह्वान भी सुन रहा हूँ। हे प्रभु, मैं तेरी ध्वनि में विश्वास करता हूँ। मुझे ग्रहण कर, मुझ जैसे को भी ग्रहण कर। अपने लहू से मुझे धो डाल और मुझे अपना चुना हुआ पात्र बना ले, ताकि तेरे सामर्थ्य की परिपूर्णता से मैं भरपूर होकर तुझे महिमान्वित करुँ। आमीन!'

अध्याय : ६

अनन्तकाल के लिए चुना जाना

भजन संहिता १०६:४, ५ के अन्तिम भाग में अब हम प्रवेश करते हैं:- "हे यहोबा, अपनी प्रजा पर की प्रसन्नता के अनुसार मुझे स्मरण कर, अपना उद्धार लेकर मेरे पास आ, कि मैं तेरे चुने हुओं का कल्याण देखूँ, और तेरी प्रजा के आनन्द में आनन्दित हो जाऊँ; और तेरे उत्तराधिकार के संग बड़ाई करने पाऊँ।" हम चाहते हैं कि इन शब्दों को अपने हृदयों में गम्भीरतापूर्वक अंकित कर लेने के पश्चात् इस अध्ययन को समाप्त करें। हमारी प्रार्थन है कि इन पदों के अनुभव हममें से प्रत्येक के अपने अनुभव हो जायें। हम यह भी प्रार्थना करते हैं कि मानवीय दुर्बलता के साथ इन पदों के विषय में जो कुछ भी अभिव्यक्त किया गया है वह पवित्र आत्मा के द्वारा आपके लिए स्पष्ट हो जाय।

इन पदों में गीतकार की जो गहरी आकांक्षा छिप है उसपर गौर कीजिए। उसके साथ ही पाँचवे पद का अन्तिम भाग '...तेरे उत्तराधिकार के संग बड़ाई करने पाऊँ' आपके हृदय के साथ एकाकार होकर आपका अपना बन जाय। जब हम प्रभु यीशु मसीह को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता मानकर ग्रहण करते हैं तो हम उस महान उत्तराधिकार का उसी प्रकार सहभागी बन जाते हैं जिस प्रकार किसी धनी परिवार में कोई बच्चा जन्म ग्रहण करते ही हो जाता है। वह बच्चा भले ही कोई गुण न रखता हो फिर भी उसे अपने पिता की सम्पति पर सम्पूर्ण अधिकार प्राप्त है।

मेरे एक रिश्तेदार बड़े धनी थे। जब उनकी मृत्यु हुई तो वे अपने पीछे एक बहुत बड़ी सम्पत्ति और नकद रुपये का महान उत्तराधिकार छोड़ गए। उनके पास बहुत जमीन थी जगह-जगह कई मकान थे। उनके दो पुत्र उनके उत्तराधिकारी हुए। बड़ा लड़का तो बड़ा होशियार है और छोटा थोड़ा बेवकूफ है। जब पिता की मृत्यु हुई तो वे दोनों भाई

पारिवारिक सम्पत्ति का बँटवारा करने को जमा हुए। बड़े भाई ने कहा "मकान का भाड़ा वसूलने और जमीन की व्यवस्था आदि करने में बड़ा झंझट है। तुम्हारे पास न तो ताकद है और न शिक्षा। अतएव मैं तुम्हें कुछ रुपये नगद दे देता हूँ और तुम मुझे अपनी सम्पति का अधिकार दे दो। छोटे भाई ने कहा – "आप मुझे कितना देंगे?" "मैं तुम्हे ५०००/- रुपये दे देता हूँ और तुम मुझे लिखकर दे दो कि तुमने अपना हिस्सा पा लिया।" परन्तु छोटे भाई ने कहा – "यद्यपि मैं मूर्ख हूँ तथापि मैं इतना तो जानता हूँ कि सम्पति का आधा भाग मेरा है। अतएव आप तो आधा ले लें और आधा मुझे छोड़ दें। मैं स्वयं तो हिसाब किताब नहीं जानता, फिर भी मैं एकाऊंटैंट बहाल कर सकता हूँ, जो मेरी सहायता करेगा। आप मुझे सब कागज –पत्र दे दें जो मैं किसी एकाउंटैंट को दिखाऊँगा ताकि वह हम दोनों को अपना-अपना हिस्सा अलग समझा दे।" बड़े भाई ने कहा – "यह तो हमारा घरेलू मामला है। तुम क्यों चाहते हो कि एक बाहरी आदमी हमारे घर का भेद जाने? हम लोग शान्ति के साथ परस्पर समझोता कर लें। यदि तुम्हें ५०००/- से सन्तोष नहीं है तो मैं तुम्हें १००००/- देता हूं। परन्तु किसी एकाउंटैंट के पास मत जाओ। १००००/- में तो तुम्हारा सारा जीवन कट जायगा। फिर तुम एकाउंटैंट बुलाकर झंझट मोल लेना क्यों चाहते हों?" छोटे भाई ने जोर देकर कहा – "मैं तो बेवकूफ हूँ ही। पर मैं अपना आधा हिस्सा चाहता हूँ। चाहे वह एक हजार हो, अथवा तीन हजार हो, अथवा अधिक हो। मुझे तो तभी सन्तोष होगा जब तेरा सही अधिकार मुझे मिल जायगा। आप कागद-पत्र निकालें और मैं एकाउंटैंट को ले आता हूँ।" बड़े भाई ने फिर कहा – "एक बाहरी व्यक्ति हमारे भेद को क्यों जाने? मैं तुम्हें १५०००/- रुपये देता हूँ।"

'नहीं, नहीं। मैं तो अपना ही हिस्सा माँगता हूँ, चाहे वह चार हजार हो अथवा पाँच हजार। आप कागज-पत्र तो निकाल लाएँ।' बड़े भाई ने फिर दुहराया - 'बाहरी आदमी को मत बुलाओ। चलो, मैं तुम्हें २५०००/- रुपये देता हूँ। एक चौथाई लाख - यह तुम्हारा

न्यायसंगत हिस्सा है।' इसी प्रकार चलता रहा अन्त में उसे एक लाख से भी अधिक मिला। क्यों? केवल इसीलिए कि उसके मन में यह विश्वास था कि उसके पिता ने उसके लिए आधी सम्पति छोड़ी है। यद्यपि वह मूर्ख, सरल, और बेवकूफ था तथापि उसने अपना पूरा हिस्सा चाहा।

किसी सांसारिक धन-सम्पति के हिस्से की माँग करने के लिए सांसारिक ज्ञान अथवा शिक्षा की आवश्यकता नहीं है। परन्तु हम विश्वासियों के लिए कभी-कभी तो कई साल लग जाते हैं और तब हम अपने स्वर्गीय उत्तराधिकार के महत्व को समझ सकते है। आइए, अब हम इसे सीखें। परमेश्वर का वचन इतना स्पष्ट और सरल है कि जब हम अपने प्रभु को अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रुप में ग्रहण करते हैं। तो वह हमें परमेश्वर का पुत्र होने का अधिकार प्रदान करता है। परमेश्वर के अनन्त प्रेम के कारण हम अनन्तकाल के लिए उसका पुत्र हो जाता है। हम विश्वास के द्वारा उसका अनन्त प्रेम प्राप्त करते हैं। प्रभु यीशु मसीह के उत्ताराधिकार में हमारा एक हिस्सा है। इस सत्य को जानने के लिए आपको हिब्रू या ग्रीक भाषा जानने की आवश्यकता नहीं है। परन्तु इस बात का हार्दिक विश्वास होना चाहिए कि पवित्र आत्मा हमारे हृदय में है। उत्तराधिकार का उपयोग करना आपके विश्वास पर निर्भर करता है। रोमी॰ ८:१७, १८। 'यदि हम सन्तान हैं, तो वारिस भी हुए, वरन्, परमेश्वर के वारिस और मसीह के सह – उत्तराधिकारी हुए।' ये बातें साथ-साथ चलती हैं। यदि आप यह कह सकते हैं कि मैं परमेश्वर की सन्तान हूँ तो आप अपने आप ही यह भी कह सकते हैं कि मैं परमेश्वर का उत्तराधिकार और प्रभु यीशु मसीह का सह – उत्तराधिकारी हूँ।

इस उत्तराधिकार का पूरा अर्थ हम इस समय समझ नहीं सकते। पर हम यह जानते हैं कि वह दिन आ रहा है जब हम इसके विषय में सब कुछ जान जायेंगे। एक छोटे लड़के को यह मालूम रहता है कि उसके पिता के पास सम्पत्ति है। परन्तु यदि आप उससे पूछ बैठें

कि तुम्हारे पिता जी के पास कितनी जमीन है, कितना धन है अथवा कितनी सम्पत्ति है तो वह आपको उत्तर देगा - 'मैं नहीं जानता!' अभी वह इतना छोटा है कि इन बातों को नहीं समझता। किन्तु जब वह बड़ा हो जायगा तो उसे अपने पिता की सम्पत्ति का पूरा ज्ञान हो जायगा। इसी प्रकार जब कि हम इस समय यह समझने के योग्य नहीं है कि हम कितनी बड़ी सम्पत्ति के उत्तराधिकारी हैं तो अनुग्रह का काम पूरा हो जाने पर जब हम अपने प्रभु को आमने-सामने देखेंगे तो उस समय हम सब कुछ जान जायेंगे।

आपको यह अवश्य विश्वास कर लेना चाहिए कि आप एक अति महान और शाश्वत उत्तराधिकार के लिए बुलाए और चुने गए हैं। प्रभु यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता और प्रभु मानकर ग्रहण कर लेने के बाद हम पूर्ण आत्मिक सहभागिता में प्रवेश करते है। सर्वप्रथम हम स्वर्गीय स्वभाव में सहभागी हो जाते हैं। २ पत॰ १:४। द्वितीयत:, हम स्वर्गीय आह्वान के सहभागी हो जाते हैं। इब्रा॰६:४। तृतीयत:, हम स्वर्गीय आह्वान के सहभागी हैं। इब्रा॰ ३:१। चौथी बात यह है कि हम परमेश्वर की पवित्रता सहभागी बन जाते हैं। इब्रा॰ १२:१२। पाँचवीं बात यह है कि हम लोग उस महिमा के सहभागी हैं जो प्रकट होनेवाली है। १ पत॰ ५:११। छठी बात यह है कि हम ज्योति में सन्तों के उत्तराधिकार के सहभागी है कुलु॰ १:१२। सातवीं बात यह है कि हम स्वयं प्रभु के ही सहभागी है। इब्रा॰ ३:१४।

परमेश्वर के स्वर्गीय उत्तराधिकार का सहभागी होना कितना अद्भुत है। हमारे प्रेमी परमेश्वर ने हमें उसी आत्मिक, अविनाशी और तेजोमय उत्तराधिकार में प्रविष्ट कराने के लिए चुना है ताकि हम उसका पूर्ण उपभोग कर सकें। आपको निश्चित रुप से यह विश्वास कर लेना चाहिए कि उस उत्तराधिकार में आपका भी भाग है। बहुत से विश्वासी हैं जो केवल यही बात सोचते हैं कि वे उद्धार पाकर स्वर्ग में प्रवेश कर सकेंगे। वे समझते हैं कि परमेश्वर दयालु है और वह हमारे पापों को इसलिए क्षमा करता है कि हम करता है कि

हम स्वर्ग में प्रवेश कर सकें। इस बात पर वे विचार करने की आवश्यकता नहीं समझते कि उन्हें अनन्तकाल के लिए रहना है। यह तो वैसे ही हुआ मानों हम हावड़ा एक्सप्रेस में सफर कर रहे हैं। इस गाड़ी में अक्सर बहुत भीड़ रहा करती है जहाँ खड़े होने की जगह भी बड़ी मुश्किल से मिलती है। आपके प्लैटफॉर्म पर आते ही गाड़ी सीटी दे देती है। आप किसी भी प्रकार गाड़ी में चढ़ जाना चाहते हैं। और कुली की सहायता से आप चढ़ भी जाते हैं और किसी कोने में चुपचाप खड़े हो जाते हैं। तब आप कहते हैं – "चलो, किसी प्रकार जगह तो मिली। जब तक मैं गाड़ी में सवार हूँ कोई चिन्ता की बात नहीं!" क्या आपके विचार से स्वर्ग भी इतना ही सीमित है कि आप चाहे जिस किसी पुराने कोने में क्यों न हों, कोई फर्क नहीं पड़ता? आप कह सकते हैं - 'हम लोग प्रचारकों, साधुओं और सन्यासियों की तरह नहीं बन सकते। हमें संसार में रहना हे, धन उपार्जित करना है तथ हमे सांसारिक व्यक्तियों के साथ रहना है। हम किस प्रकार सब वस्तुओं का परित्याग करें?' बस, इसी प्रकार शत्रु आपको ठगता है। स्वर्गीय उत्तराधिकार का भागीदार बनने से वह आपको रोकना चाहता है। आपको अपना हिस्सा माँगना पड़ेगा ताकि विजयी जीवन बिताकर आप भी इस उत्तराधिकार का उपभोग कर सकें। प्रकाशित॰ २१:७ में प्रभु स्वयं कहता है - 'जो विजय पाए वह सब वस्तुओं का उत्तराधिकारी होगा, मैं उसका परमेश्वर होऊँगा और वह मेरा पुत्र होगा।'

यदि आप किसी बच्चे से पूछें - 'यह व्यक्ति कौन है?' अथवा, 'वह औरत कौन है?' तो वह बच्चा जो अपने पिता अथवा अपनी माता का हाथ पकड़े हुए है, उत्तर देगा - 'ये मेरे पिताती है,' अथवा, 'वह मेरी माँ है!' वह अपने उत्तराधिकार को जानता है। यदि आप नई सृष्टि की सब वस्तुएँ उत्तराधिकार के रुप में पायें तौभी आपके प्रभु पर जो आपका उत्तराधिकार हैं वह सबसे महान होगा। आप यह कह सकने में समर्थ होंगे - 'वह मेरा प्रभु है, मेरा अपना परमेश्वर है। मैं उससे किसी भी समय अथवा किसी भी स्थान में

मिल सकता हूँ।' इस रुप से हमें इस पृथ्वी पर ही स्वर्गीय वस्तुओं का पूर्व-स्वाद चखाया जाता है।

अपने नये जीवन के प्रारम्भिक दिनों में जब आप प्रार्थना के लिए बैठते हैं तो आप सांसारिक वस्तुओं से सम्बन्धित प्रार्थना करते हैं। जहाज पर की एक छोटी बच्ची प्रतिदिन प्रात:काल अपनी गुड़िया लेकर कैप्टेन के साथ खेलने को जाती थी। एकदिन वह गुड़िया समुद्र में गिर गई। इसपर उसने जिद्द की कि जहाज रोक दिया जाय। कैप्टेन ने पूछा – "क्यों?" उसने उत्तर दिया – "मेरी गुड़िया समुद्र में गिर गई; मैं उसे निकालना चाहती हूँ।" कैप्टेन ने कहा – "मैं इतने बड़े जहाज को एक छोटी सी गुड़िया के लिए कैसे रोकूँ? यदि कोई मनुष्य समुद्र में गिर जाता तो मैं उसे रोक देता। एक छोटी सी गुड़िया के लिए मैं ऐसा नही कर सकता हूँ।" बच्ची कैप्टेन से दू जाकर बोली - 'तुम बुरे आदमी हो, बहुत ही बुरे हो! ' थोड़ी ही देर में जहाज बन्दरगाह में आकर लगा। बच्ची अपने माता-पिता के साथ भोजनालय में गई मौके से कैप्टेन भी उसी जगह जा पहुँचा। जब उसने उस बच्ची को देखा तो वह एक दुकान में गया। वहाँ उसने एक बहुत ही सुन्दर बड़ी सी गुड़िया खरीदी। उसे लेकर वह फिर भोजनालय में आया। उसे टेबल पर रखकर उसने बच्ची को पुकारा - 'आ जाओ मेरी बच्ची, देखो, मैंने तुम्हारे लिए क्या लाया है।' परन्तु उस बच्ची ने अपना मुँह फेर लिया और बोली - 'तुम बहुत ही बुरे आदमी हो।' तब कैप्टेन ने धीरे से बक्से को खोला, उसके ढक्कन को हटाया और बच्ची को वह गुड़िया दिखाई। गुड़िया देखते ही बच्ची चिल्ला उठी - 'अरे, यह क्या मेरे लिए है? क्या यह सचमुच मेरे ही लिए है? तुम तो बहुत ही अच्छे आदमी हो! ' यह कहकर व कैप्टेन से लिफ्ट गई और उसे धन्यवाद देने लगी।

हमारे साथ भी यही बात है। हम परमेश्वर से केवल सांसारिक वस्तुओं को माँगते हैं। जब परमेश्वर हमारी प्रार्थना को सुनता है तो हम कहते है – "परमेश्वर तो बहुत अच्छा

है!" हम हरेक सभा में जाते हैं और वहाँ कई कार्यवाहियों भाग लेते हैं। परनु जब दुख, संकट और परीक्षाएँ आती हैं तो हम कहने लगते हैं – "परमेश्वर कहाँ है? वह कहाँ है? मैं अब किसी सभा में नहीं जाऊँगा, और न उसके नाम पर कोई पैसा ही दूँगा। देखिए न, मैंने इतने अच्छे-अच्छे काम किए, तौभी प्रभु ने मुझे इन परीक्षाओं में डाल दिया है। उसने मुझे त्याग दिया है, वह मुझे भूल गया है।" क्या यह सही है? आप उसके बच्चे हैं। उसके तरीके आपके तरीकों से कहीं अच्छे हैं। उसने आपको एक तेजस्वी स्वर्गीय उत्तराधिकार के लिए बुलाया है और उस उत्तराधिकार का उपभोग करना आपके विजयी जीवन बिताने की क्षमता पर निर्भर करता है। रोमी॰ ८:१८ में हम पढ़ते हैं कि हमारे दुख और कष्ट चाहे जितने ही भारी क्यों न हों, परवाह नहीं। क्योंकि वे इस योग्य नहीं कि हम उनकी तुलना उस महिमा से करें जो हममें और हमारे द्वारा प्रकट होनेवाली है। हमें पूरे मन से इस बात पर विश्वास करना चाहिए कि परमेश्वर ने हमे अपने महिमित राज्य में बुलाया है। १ थिस्स॰ २:१२। मैं विश्वास करता हूँ कि परमेश्वर ने मुझे उस महिमामय राज्य में बुलाया है। और यदि हम इस सत्य में विश्वास करें तो हम इस अनुरुप कार्य भी करेंगे।

मेरे पाँच भाई हैं। जो मुझसे छोटा है वह कुछ साल पहले एक बड़ा अफसर बन गया। एक दिन जब हम साथ-साथ यात्रा कर रहे थे तो उसने मुझसे कहा - 'अब मैं तीसरी श्रेणी में यात्रा नहीं कर सकता।' मैंने कहा - 'अब तक तो तुम तीसरे दर्जे में ही सफर करते रहे!' उसने उत्तर दिया – 'अब मैं एक मैजिस्ट्रेट हूँ और यह मेरी प्रतिष्ठा के विपरीत है। मुझे कर्ज भी लेना पड़े तौभी मैं प्रथम श्रेणी में ही सफर करुँगा ताकि मैं अपनी पद-प्रतिष्ठा की रक्षा कर सकूँ।' यह एक महान सत्य के अत्यन्त निम्नश्रेणी का उदाहरण है। जब आप विश्वास करते हैं कि अपने राज्य और महिमा के लिए परमेश्वर ने आपको बुलाया है तो आप का आचरण भी इसी आह्वान के अनुरुप होगा। आप परमेश्वर की सन्तान हैं, उसके

सहभागी और पात्र हैं; आप राजा हैं, युवराज हैं और पुरोहित हैं। उसने अनुरुप आप अपना आचरण बनाएँ।

उस गौरवमय स्वर्गीय आह्वान के लिए अनेकानेक परीक्षाओं, प्रलोभनों, कठिनाइयों और परेशानियों से होकर हमें ले जाया जायगा और इस प्रकार हम तैयार किए जायेंगे। हमें यह कहने का कोई अधिकार नहीं कि वह हमें किस प्रकार प्रशिक्षित करे। जब आप किसी कॉलेज या विश्वविद्यालय में भर्ती हैं तो अपने प्रोफेसर से आप यह नहीं कह सकते कि 'प्रोफेसर साहब, मैं ग्रैजुएट हूँ; धनी परिवार में उत्पन्न हुआ हूँ; अतएव मैं आपकी बताऊँगा कि आप कैसे पढाएँ!' इस ढंग से बोलने का अधिकार आपको बिल्कुल नहीं है। वह जो पढ़ाएँ उसे आपको सीखना हैं क्योंकि उसे ही मालूम है कि आपके लिए सबसे अच्छा क्या है। परमेश्वर ही जानता है कि वह हमें कैसे प्रशिक्षित करे। अतएव उसकी डाँट-फटकार और जाँच-परीक्षाओं का अवश्य ही हमारे लिए कुछ अर्थ है।

उत्तराधिकार के विषय में एक बात और है। उत्तराधिकार ऐसी वस्तु है जिसे हम अपने माता-पिता से प्राप्त करते हैं। उदाहरणस्वरुप, मैंने अपने पिता के स्वभाव और चरित्र को उत्तराधिकार के रुप में पाया है। यदि आप मुझे मेरे पिता, दादा और परिवार के अन्य व्यक्तियों के साथ देखें तो आप कहेंगे कि 'आप लोग अपने परिवार में हू-बहू एक दूसरे से मिलते हैं।' मेरे पिताजी की आदत है कि वे अपने हाथ को ऊँचा उठाकर रखें और यह आदम मुझ में भी है। अतएव जिसने मुझे और मेरे पिताजी दोनों को देखा है वह झट कहने लगता है - 'आप कितना अधिक अपने पिता से मिलते हैं।'

कुछ नवयुवक बड़े चतुर होते है। आप कह सकते हैं - 'वह पंजाबी नहीं हो सकता, वह तो बड़ा होशियार है। सम्भव हे वह आन्ध्र प्रदेश का हो।' 'नहीं, नहीं; वह तो कहीं अधिक होशियार है, शायद वह बंगाली हो।' 'नहीं, वह तो बंगाली से भी अधिक होशियार है।' 'तब वह क्या है? क्या मलयाली है?' 'सम्भव है! वह बड़ा होशियार है। अवश्य वह

मलयाली है।' एक प्रकार का उत्तराधिकार जातीयता से बँधा हुआ होता है जिसे हम अपने माता-पिता से प्राप्त करते हैं। इसी प्रकार, परमेश्वर की सन्तान होने के कारण हमारे स्वर्गीय पिता का स्वभाव और स्वर्गीय राष्ट्रीयता के चिन्ह हममें स्पष्टत: प्रकट होने चाहिए। पापी के रुप में हम पाप, लज्जा और अशुद्धता से भरे रहते हैं। परन्तु परिवर्तन के बाद हम प्रमाण स्वरुप कुछ स्वर्गीय लक्षणों की प्राप्त करते हैं। ये लक्षण हमें परिवार और वंश से नहीं मिलते। ये गुण सांसारिक राष्ट्रीयता से भी नहीं मिलते। बल्कि ये गुण हमें प्रभु यीशु मसीह के द्वारा प्रदान किए जाते है। हमारे प्रभु के गुण और लक्षण अर्थात् दया, कोमलता, प्रेम, धीरज, सहनशीलता और शान्तचित्तता हममें प्रवेश करने लगते हैं। यह हमारा स्वर्गीय उत्तराधिकार है जो हमें अपने माता-पिता, शिक्षक, प्रचारक अथवा प्राध्यापक से नहीं मिला है, बल्कि परमेश्वर क उस जीवन से जो हममें है। तथापि हमारे हृदय में इस बात की अभिलाषा होनी चाहिए कि ये गुण हमारे जीवन में अभिव्यक्त हों।

जब राज-परिवार में किसी बालक का जन्म होता है तो वह उसी दिन से राजकुमार कहलाता है और सबलोग इसे जानते हैं। हो सकता है कि वह बालक बहुत ही काला है, उसके ओठ बड़े मोटे है, कान लम्बे है और सिर में बाल नहीं है, तथापि वह एक राजकुमार है। परमेश्वर की सन्तान होने के कारण हम लोग राजा और याजक हें। यह हमारा अधिकार है। प्रकाशित १:६। ऐसा मत समझिए कि ये शब्द केवल प्रेरितों, शहीदों और नबियों के लिए कहे गए हैं। ये शब्द सबके लिए हैं। वे सब लोग, जो प्रभु यीशु के लहू से धुलकर शुद्ध और पवित्र बनाए गए हैं, स्वर्गीय घराने में जन्म लेते हैं और वे परमेश्वर के राजकुमार और याजक बनाए जाते हैं।

भारत में प्राचीनकाल में भारतीय राजकुमारों के लिए एक अलग राजकीय महाविद्यालय होता था जहाँ उन्हें लिखने पढ़ने के साथ-साथ शासन करना तथा राजाओं के समान वर्त्ताव करना भी सिखाया जाता था। इसी प्रकार परमेश्वर के जीवन-महाविद्यालय

में हम लोगों को जीवन में शासन करना तथा स्वर्गीय राजा के समान आचरण करना सिखाया जाता है।

आजकल किसी कॉलेज में भर्ती हाने के लिए स्थान मिलना बड़ा कठिन हो गया है। लोग जगह पाने के लिए एक कॉलेज से दूसरे में और एक स्थन से दूसरे स्थान में जाते हैं। परन्तु परमेश्वर की प्रशिक्षण विधि बिल्कुल भिन्न है। उदाहरण के लिए हमलोग दाऊद के जीवन को लें। दाऊद को अपने शत्रुओं के डर से भागकर अदुल्लाम की अन्धकरारपूर्ण गुफा में छिपना पड़ा। उसने सोचा होगा कि परमेश्वर ने उसे त्याग दिया। पर वह तो राजा होनेवाला था। सब प्रकार से वह योग्य पुरुष समझा गया था। वह परमेश्वर के मन का व्यक्ति था। तो फिर परमेश्वर ने उसे मरुस्थल में, गुफाओं में, जंगलों में क्यों भटकने दिया? उसने शाऊल को आठ लम्बे वर्षों तक उसका पीछा करने क्यों दिया? वह तो दाऊद के लिए परमेश्वर का विश्वविद्यालय और प्रशिक्षण महाविद्यालय था जहाँ उसने अनेकों स्वर्गीय तथ्यों को सीखा, जहाँ उसने बैठकर अनेकों नये गीतों की रचना की और जहाँ परमेश्वर ने उसे सामर्थी पुरुषों को सहकर्मी के रुप में उसके साथ काम करने को दिया। कई वर्षों के बाद जब उसने सभी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त कर ली तो एक दिन परमेश्वर ने उसक सामने प्रकट होकर उसे एक स्वर्गीय योजना दी। १ इतिहास॰ २५:१९ के अनुसार परमेश्वर ने उसे मन्दिर की योजना दी। 'प्रभु ने मुझ पर अपना हाथ रखकर इस नमूने की सारी बातें लिखित रुप में समझा दी।' मैं विश्वास करता हूँ कि दाऊद के जीवन में वह सबसे अधिक आनन्द का दिन था जबकि प्रभु का हाथ उसपर था; और उसने स्वर्गीय योजना का अनुसरण किया। परन्तु परमेश्वर ने उसे वह मर्यादा आरम्भ में नहीं दी। तैयार के लिए उसे उन सारी परीक्षाओं से होकर गुजरना पड़ा। यही वह स्वर्गीय मार्ग है जिससे परमेश्वर शायद आपको प्रशिक्षित और तैयार कर रहा है। आपके जीवन में वह दिन आनेवाला है जब आप परमेश्वर की स्वर्गीय योजना को स्पष्ट रुप से देख सकेंगे।

फिर उत्तराधिकार से आपका भविष्य भी बनता है। जब आपका जन्म परमेश्वर के परिवार में हो जाता है तो आप यह भी जान लेते हैं कि एक दिन उसके राज्य में आप सदा-सर्वदा के लिए शासन करेंगें और आप इसी के लिए तैयार किए जा रहे हैं। रानी विक्टोरिया जब छोटी थी तो उसे यह ज्ञान नहीं था कि वह एक दिन रानी बनेगी। उसे गुड़िया खेलने में बड़ा मन लगता था। इसलिये परिवार के सब लोगों को यह आदेश दे दिया गया था कि व्कोई उसे यह न बताए कि वह एक दिन रानी बननेवाली है। अन्त में उसे ज्ञात हुआ कि वह राजगद्दी की उत्तराधिकारिणी है। तब वह राजमहल के प्रत्येक व्यक्ति से पूछती चली - 'क्या यह सत्य है?' 'अरे, क्या यह सत्य है?' 'क्या यह सत्य है कि मैं इंग्लैंड की रानी बनने जा रही हूँ?' बस, उस दिन से उसने गुड़िया खेलना बन्द कर दिया। वह बड़ी गम्भीरतापूर्वक बोली - 'मुझे एक विशाल राज्य पर शासन करना है। मुझे गम्भीर होना ही चाहिए।' अब इसी प्रकार हमें भी यह सीख लेना चाहिए कि शासन कैसे किया जाता है। उत्तराधिकार के द्वारा हमें परमेश्वर का सारा अधिकार प्रदान किया गया है। परन्तु जान लेना चाहिए कि हम उसका उपयोग कैसे करें। परमेश्वर हमें इसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रशिक्षित कर रहा है।

इसी प्रकार जब आप किसी बड़ी सम्पत्ति के उत्तराधिकारी बनते हैं तो आपको यह सीखना पड़ता है कि उस सम्पती का उपयोग कैसे किया जाय। भारत में कुछ राजा लोग अपना धन रखने के लिए मजबूत घर बनवाते हैं। तब वे सन्तुष्ट होकर कहते हैं - 'मेरे पास इतना धन है, इतने हीरे, इतना सोना, इतने जवाहिरात और इतनी चाँदी है।' परन्तु यह सारा का सारा धन वहीं पड़ा रहता है, वह केवल देख-देखकर खुश होने के लिए रहता है। पर स्वर्गीय धन केवल रखने के लिए नहीं मिलता। उसका व्यवहार करना पड़ता है। इसीलिए हम सब प्रशिक्षित किए जा रहे हैं कि उस धन का उपयोग कैसे करें।

किसी व्यवसाय का ज्ञान कभी-कभी उत्तराधिकार के रुप में प्राप्त किया जाता है। जब आप बचपन से किसी काम को सीखते है तो बहुत ही कम उम्र में आप एक अच्छे मिस्त्री अथवा सुनार हो जाते हैं। दूसरों को वही काम सीखने के परिवार में हुआ है वह शीघ्र ही उस काम को सीख लेगा। इसी प्रकार आप भी नये जन्म के समय से परमेश्वर के ज्ञान में अंश ग्रहण करते हैं। आप प्रभु यीशु मसीह के सहकर्मी बन जाते हैं।

अन्त में, हम सब स्वयं परमेश्वर का अधिकार बनने के लिए चुने जाते हैं। जब माता-पिता अपनी सम्पत्ति का बँटवारा करते हैं तो सब बच्चों को एक भाग दिया जाता है। किन्तु साथ ही साथ माता-पिता भी उस समय बड़ा आनन्द अनुभव करेंगे जब उनके बच्चे भी उन्हें कुछ देते है। माता-पिता अपने बच्चों को अपना प्रेम देने के लिए लालायित रहते हैं। यह हमारा स्वर्गीय उत्तराधिकार है। अपने स्वर्गीय पिता, मित्र और दूल्हे के प्रेम का उपभोग हम पूर्णरुपेण करें। पर वह हममें भी सन्तुष्ट होने की आकांक्षा रखता है। हम उससे कितना प्रेम करते है? शोक की बात है कि अनेकों बार हम अपने स्वर्गीय उत्तराधिकार तथा स्वर्गीय पिता के विषय में लज्जित होते हैं।

जब मैं अपने विद्यालय के छात्रावास मे रहता था तो एक बार मेरे पिताजी मुझसे मिलने आए। वे एक बड़ी पगड़ी पहने हुए पुराने ढंग के व्यक्ति थे और एक लम्बा कुरता तथा देहाती जूता पहने हुए थे। वे मुझसे मिलने आए थे और अपने साथ घी, मिठाई और कुछ नकद पैसे भी लाए थे। तब मेरे एक मित्र ने उन्हें देखा। उसने मुझे बाहर बुलाकर मुझसे पूछा - 'यह आदमी कौन है?' मैंने उसे बताया कि वह बूढ़ा हमारे गाँव का एक आदमी है। आप मेरी मूर्खता पर हसेंगे, पर यह बिल्कुल सच है। मैंने अपने पिता के लाए हुए पैसे और सब चीजें तो ले लीं, परन्तु उन्हें अपना पिता कहकर स्वीकार करने में मुझे बड़ी लज्जा आई। उन्होंने मेरे लिए एक अंग्रेजी सूट भी लाया था; फिर भी मैं इतना अभिमानी था कि उन्हें पिता के रुप में ग्रहण नहीं कर सका।

शोक हैख कि अनेकों विश्वासी ऐसे हैं जो प्रभु यीशू मसीह को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता मान लेने में लज्जा बोध करते है। जब वे अपने पड़ोसियों और मित्रों के पास जाते हैं तो वहाँ वे अपने प्रभु को मान लेने में लजाते हैं। किन्तु जब वे दुख में पड़ते हैं तो रो-रोकर पुकारने लगते हैं – "हे प्रभु, मेरी सहायता करो, मुझे बचाओ; मुझे तुम्हारी सहायता की आवश्यकता है।" प्रभु तो तात्काल ही हमारी सहायता करता है, पर इससे उसका हृदय सन्तुष्ट नहीं होता। वह चाहता है कि हम पूरी तौर से उसके साथ मिलकर एक हो जायें, हम उसे पूरी तौर से जकड़ लें; हम उसके साथ वही व्यवहार करें जैसा पत्नी अपनी पति के साथ करती है। यही हमारा अनन्तकालीन स्वर्गीय उत्तराधिका है, और उसका भी ऐसा ही अधिकार मुझ पर है। प्रभु हमें उस गौरवमय उत्तराधिकार को प्राप्त करने की गहरी से गहरी आकांक्षा और उसे प्राप्त करने के सभी साधनों की सच्ची अनुभूति प्रदान करे।

आइए, हम एक बार फिर भजन॰ १०६:४ ,५ पढ़ें और यह प्रार्थना करें कि ये वचन हमारे व्यक्तिगत जीवन के लिए भी सत्य हों। परमेश्वर करे कि हमारा हृदय अधिकाधिक रुप से इन तीन बातों के लिए लालायित हो उठें - 'परमेश्वर के चुने हुओं का कल्याण हर्षित होकर देखूँ, उसकी प्रजा के आनन्द में आनन्दित हो जाऊँ और उसके उत्तराधिकार के साथ गौरवान्वित होऊँ ताकि वह और हम सबलोग उस उत्तराधिकार में एक साथ मिलकर अनन्तकाल के लिए आनन्द मनाएँ। आमीन।

भाई बख्त सिंह के द्वारा

हिन्दी में अन्य पुस्तक, पुस्तिकायें:

१. आनन्दमय वैवाहिक जीवन के लिए ईश्वरीय सिद्धांत

२. चालीस पर्वत शिखरें

३. जयवन्त का रहस्य

४. दाऊद सब का सब लोटा लाया

५. देखो, मैं एक नया काम करुँगा

६. परमेश्वर की महिमा का पुनरागमन

७. प्रभु का आनन्द

८. प्रभु का आवाज

९. बहुत काम

१०. सच्ची स्वतन्त्रता

११. सब से महान रहस्य

१२. सात स्वर्गीय बातें

१३. स्वर्गीय निर्वाचन

१४. विजय की प्रधान सड़क

पुस्तिकायें:

१. अकथ्य और महिमा से भरपूर आनन्द मुझे कैसे मिला

२. उसके प्रेममय हाथों का चातुर्य

३. ऐसा महान उद्धार

४. परमेश्वर की इच्छा कैसे खोज निकालें

और दूसरी किताबें छप रही हैं।